नवसर्जन संस्कृति

PRGI No. UPHIN/25/A1698

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM LUCKNOW

वर्ष : 02
अंक : 065
दि. 04.07.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

'पॉलिसी पैरालिसिस से मुक्त हुई यूपी की नौकरशाही', विकसित उत्तर प्रदेश के लिए दौड़ने को तैयार; सीएम योगी की दोटूक

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश की नौकरशाही अब पॉलिसी पैरालिसिस से मुक्त होकर विकसित यूपी के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तैयार है।

(जीएनएस)।

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश की नौकरशाही अब पॉलिसी पैरालिसिस का शिकार नहीं है, बल्कि पूरी तेजी के साथ विकसित उत्तर प्रदेश के लक्ष्य को हासिल करने के लिए दौड़ने को तैयार है। विकसित भारत की आधारशिला उत्तर प्रदेश बनेगा और इसके लिए प्रदेश के प्रत्येक गांव, कस्बे और वार्ड को आत्मनिर्भर बनाना होगा। राजनीतिक नेतृत्व केवल विजन दे सकता है, लेकिन उसे धरातल पर उतारने की पूरी ताकत प्रशासनिक मशीनरी के पास होती है। इसलिए प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और सकारात्मक कार्यसंस्कृति बेहद जरूरी है।

मुख्यमंत्री शुक्रवार को डॉ. राम मनोहर लोहिया उत्तर प्रदेश प्रशासन एवं प्रबंधन अकादमी के 464 करोड़ रुपये से अधिक लागत से 22 एकड़ से ज्यादा क्षेत्रफल में निर्मित अत्याधुनिक नवीन परिसर का लोकार्पण करने के उपरांत प्रशासनिक अधिकारियों और प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। इससे पहले उन्होंने विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर भवन का उद्घाटन किया और परिसर का निरीक्षण कर विभिन्न सुविधाओं व व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

सीएम ने कहा कि इस अकादमी को भारत के अग्रणी स्कूल ऑफ पब्लिक लीडरशिप के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। नॉलेज टू डेवलपमेंट, डेवलपमेंट टू पब्लिक ट्रस्ट और पब्लिक ट्रस्ट टू नेशन बिल्डिंग की संकल्पना को साकार करने में यह संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसी उद्देश्य से आधुनिक सुविधाओं से युक्त अकादमी का निर्माण कराया गया है। एकला चलो की सोच या टीम को कमजोर करने की मानसिकता से अच्छे परिणाम नहीं मिल सकते। टीमवर्क, सकारात्मक सोच और नवाचार ही सफलता का आधार हैं। प्रशासनिक अधिकारियों को लगातार सीखते रहने, तकनीक आधारित सुशासन, संवेदनशील प्रशासन और नवाचार को अपनाने की आवश्यकता है।

नौ वर्षों में बदली उत्तर प्रदेश की पहचान

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश की पिछले नौ वर्षों की विकास यात्रा स्वयं बहुत कुछ कहती है। शासन व आमजन के बीच प्रशासनिक अधिकारी सबसे महत्वपूर्ण सेतु होते हैं। यदि यह सेतु मजबूत होगा तो सरकार की योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचेगा और जनता की धारणा भी सकारात्मक बनेगी। वर्ष 2017 से पहले दो-तीन दशकों तक उत्तर प्रदेश की छवि बेहद नकारात्मक हो गई थी। लोग मानने लगे थे कि देश की कोई भी योजना उत्तर प्रदेश में सफल नहीं हो सकती। इसके लिए केवल प्रशासनिक अधिकारी ही नहीं, बल्कि राजनीतिक नेतृत्व भी जिम्मेदार था।

अब पहचान का संकट नहीं, टॉप-3 अर्थव्यवस्था में यूपी

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले नौ वर्षों में उत्तर प्रदेश ने अपनी नई पहचान बनाई है। आज प्रदेश देश की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में अपनी जगह बना चुका है। सुरक्षा, सुशासन, क्राउड मैनेजमेंट, टेक्नोलॉजी आधारित सुधार और प्रशासनिक कार्यप्रणाली के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। अब यहां किसी के सामने पहचान का संकट नहीं है। अब कोई इसे बीमारू राज्य नहीं कह सकता। प्रदेश लगातार छह वर्षों से रेवेन्यू सरप्लस स्टेट बना हुआ है। भारत सरकार की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में प्रदेश लगातार पहले या दूसरे स्थान पर रहता है।

मिशन कर्मयोगी और आई-गॉट प्लेटफॉर्म पर भी यूपी नंबर-1

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी के मिशन कर्मयोगी के तहत आई-गॉट प्लेटफॉर्म पर क्षमता निर्माण के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश पहले काफी पीछे था, लेकिन प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रयासों से अब देश में पहले स्थान पर है। यह हमारे प्रशासनिक तंत्र की कार्यक्षमता का प्रमाण है। विकसित भारत-विकसित उत्तर प्रदेश के विजन को लेकर प्रदेशभर में व्यापक संवाद अभियान चलाया गया। विधानमंडल से लेकर गांवों की चौपाल तक चर्चा हुई। 300 वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, शिक्षाविदों और पूर्व अधिकारियों ने विभिन्न वर्गों के बीच जाकर संवाद किया। प्रदेश सरकार के पोर्टल पर 98 लाख से अधिक सुझाव प्राप्त हुए, जिनके आधार पर विजन डॉक्यूमेंट तैयार किया गया।

तकनीक ने खत्म किया भ्रष्टाचार, गरीब को मिला अधिकार

मुख्यमंत्री ने कहा कि टेक्नोलॉजी आधारित सुधारों ने आमजन के जीवन में बड़ा बदलाव किया है। राशन वितरण में ई-पॉस मशीनें लागू होने से शिकायतें समाप्त हो गईं और गरीबों को उनका पूरा अधिकार मिलने लगा। पहले राशन व्यवस्था में भ्रष्टाचार होता था, लेकिन अब पारदर्शिता आई है और जनता संतुष्ट है। गन्ना किसानों को पहले पर्ची, ब्लैक मार्केटिंग और घटतौली जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। अब मोबाइल पर ही पूरी जानकारी उपलब्ध हो जाती है। डीबीटी व्यवस्था लागू होने से पेंशन और अन्य योजनाओं का पैसा सीधे लाभार्थियों के खाते में पहुंच रहा है और बिचौलियों की भूमिका समाप्त हो गई है।

इन्फ्रास्ट्रक्चर में यूपी बना देश का अग्रणी राज्य

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश आज देश में सबसे बड़े एक्सप्रेसवे नेटवर्क वाला राज्य है। देश के लगभग 60 प्रतिशत एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश में हैं। फोर लेन और सिक्स लेन सड़क नेटवर्क तेजी से विकसित हुआ है। मेट्रो, एयरपोर्ट, रैपिड रेल, इनलैंड वॉटरवे जैसी परियोजनाएं उत्तर प्रदेश की नई पहचान बन चुकी हैं और यह सब डबल इंजन सरकार की ताकत का परिणाम है।

इस अवसर पर वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना, मुख्य सचिव एसपी गोयल, पूर्व मुख्य सचिव आर. रमणी, अतुल गुप्ता, आलोक रंजन, अनूप चंद्र पांडेय, दुर्गा शंकर मिश्र, मनोज कुमार सिंह समेत बड़ी संख्या में प्रदेश के सेवारत एवं सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी और प्रशिक्षु अधिकारी मौजूद रहे।

सपा के 'ट्रबलशूटर' राजेंद्र चौधरी वेंटिलेटर पर क्यों? मुलायम-अखिलेश के करीबी

समाजवादी पार्टी (सपा) में जब भी तूफान आता है, राजेंद्र चौधरी मोर्चा संभालते नजर आते हैं। लेकिन, इस

बार खुद उनकी तबीयत ने पार्टी को झकझोर दिया। उत्तर प्रदेश के आगामी विधानसभा चुनाव 2027 से पहले, सपा के संकटमोचक वरिष्ठ नेता, मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता और एमएलसी राजेंद्र चौधरी की अचानक तबीयत बिगड़ गई। उन्हें लखनऊ के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां चार डॉक्टरों की टीम की निगरानी में इलाज चल रहा है।

शाहरुख खान ने बनाया खुद का इंटरनेशनल स्टेडियम, हैरान रह गई दुनिया

(जीएनएस)।

बॉलीवुड के किंग खान यानी शाहरुख खान की मालिकाना हक वाली फ्रैंचाइजी नाइट राइडर्स ग्रुप ने खेल जगत के ग्लोबल नक्शे पर एक ऐसा ऐतिहासिक और अभूतपूर्व कारनामा कर दिखाया है जिसे आज तक दुनिया की कोई भी क्रिकेट फ्रैंचाइजी अंजाम नहीं दे पाई थी। नाइट राइडर्स ग्रुप ने अमेरिका के कैलिफोर्निया स्थित लॉस एंजिल्स में अपना खुद का शानदार अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम तैयार कर लिया है।

दुनिया भर में अपनी तीन आईपीएल ट्रॉफियों और आक्रामक ब्रांड वैल्यू के लिए मशहूर कोलकाता नाइट राइडर्स का यह नया कदम खेल के वैश्विक विस्तार की दिशा में मील का पत्थर माना जा रहा है। अमेरिका के पोमोना फेयरप्लेक्स में बनकर तैयार हुए इस भव्य मैदान का वीडियो भी सामने आ गया है, जिसे आईसीसी ने शेयर किया है।

दुनिया के इतिहास में खुद का स्टेडियम बनाने वाली पहली ग्लोबल क्रिकेट फ्रेंचाइजी बनी केकेआर

स्टेडियम के उद्घाटन के साथ ही नाइट राइडर्स ग्रुप दुनिया का पहला ऐसा ग्लोबल क्रिकेट ब्रांड बन गया है जिसने विदेशी धरती पर अपना खुद का अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट ग्राउंड स्थापित किया है। इस ऐतिहासिक मैदान का नाम आधिकारिक तौर पर नाइट राइडर्स क्रिकेट ग्राउंड रखा गया है जो हर आधुनिक सुविधा से लैस है।

इस मैदान की भव्यता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसके मुख्य स्क्वायर पर आठ बेहद उच्च गुणवत्ता वाली प्राकृतिक घास की विकेट्स बनाई गई हैं। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय नियमों के मानकों को पूरा करने वाले इस खूबसूरत अरीना में रात के मैचों के शानदार प्रसारण के लिए 120 फीट ऊंचे छह विशाल फ्लडलाइट टावर्स भी खड़े किए गए हैं।

बेहद भावुक हुए किंग खान शाहरुख

इस ऐतिहासिक और गौरवशाली क्षण पर सोशल मीडिया के जरिए अपनी गहरी खुशी जाहिर करते हुए बॉलीवुड के मेगास्टार शाहरुख खान काफी भावुक नजर आए। किंग खान ने दुनिया भर के प्रशंसकों के नाम एक विशेष संदेश साझा करते हुए कहा कि जो सफर कुछ साल पहले सिर्फ एक छोटे से सपने के रूप में शुरू हुआ था, वह आज पूरी तरह हकीकत बन चुका है।

देश को मिलेगी पहली ग्रीनफील्ड रिफाइनरी, पीएम मोदी करेंगे लोकार्पण, राजस्थान को देंगे करोड़ों की सौगात

विशेषज्ञों के मुताबिक इससे हजारों की संख्या में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होंगे और पश्चिमी राजस्थान के औद्योगिक तथा सामाजिक-आर्थिक विकास को नई गति मिलेगी.

(जीएनएस)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कल 4 जुलाई को राजस्थान के बालोतरा जिले के पचपदरा पहुंचकर देश की पहली ग्रीनफील्ड एकीकृत रिफाइनरी राष्ट्र को समर्पित करेंगे. करीब 79,450 करोड़ रुपये की लागत से तैयार इस रिफाइनरी प्रोजेक्ट को न केवल राजस्थान बल्कि पूरे देश के ऊर्जा और पेट्रोकेमिकल क्षेत्र के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि माना जा रहा है. प्रधानमंत्री मोदी अपने इस दौरे में करीब 1.06 लाख करोड़ रुपये की कई अन्य विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण भी करेंगे.

पचपदरा रिफाइनरी का निर्माण हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) और राजस्थान सरकार के संयुक्त उपक्रम के तहत किया गया है. इस अत्याधुनिक परिसर की रिफाइनिंग क्षमता 9 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष (एमएमटीपीए) है, जबकि इसकी पेट्रोकेमिकल उत्पादन क्षमता 2.4 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष है. रिफाइनरी का नेल्सन कॉम्प्लेक्सिटी इंडेक्स 17.0 है, जो इसे दुनिया की आधुनिक और उच्च दक्षता वाली रिफाइनरियों की श्रेणी में शामिल करता है.

पूरे मामले में?

विशेषज्ञों के मुताबिक इससे हजारों की संख्या में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होंगे और पश्चिमी राजस्थान के औद्योगिक तथा सामाजिक-आर्थिक विकास को नई गति मिलेगी. प्रधानमंत्री मोदी बालोतरा में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रदेश के विभिन्न विभागों में भर्ती हुए करीब 54 हजार युवाओं को नियुक्ति पत्र भी सौंपेंगे. इनमें शिक्षा, ऊर्जा, गृह, पंचायती राज, परिवहन, उच्च शिक्षा, कौशल विकास, कृषि, सूचना प्रौद्योगिकी और अन्य विभागों के चयनित अभ्यर्थी शामिल हैं.

इसके अलावा प्रधानमंत्री जयपुर मेट्रो के दूसरे चरण, चूरू-सादुलपुर और चूरू-रतनगढ़ रेल लाइन दोहरीकरण, जोधपुर रिंग रोड के नए चार लेन खंड, बीकानेर की 1000 मेगावाट और 300 मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजनाओं, राजस्थान नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के लिए नई बिजली ट्रांसमिशन परियोजनाओं समेत कई महत्वपूर्ण विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण करेंगे.

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी का यह कार्यक्रम पहले अप्रैल महीने में प्रस्तावित था, लेकिन 21 अप्रैल को शिलान्यास से महज एक दिन पहले ही रिफाइनरी में भीषण आग लग गई थी. आग लगने से रिफाइनरी के एक हिस्से को बड़ा नुकसान पहुंचा था. आग लगने की घटना की वजह से 21 अप्रैल का कार्यक्रम महज कुछ घंटे पहले ही स्थगित कर दिया गया था.

शिवसेना नेता संजय देशमुख ने प्रधानमंत्री मोदी से की मुलाकात

(जीएनएस)।

नई दिल्ली, 3 जुलाई (आईएएनएस)। शिवसेना के नेता संजय देशमुख ने पूरे परिवार के साथ शुक्रवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। संजय देशमुख यवतमाल वाशिम से सांसद हैं। उन्होंने मुलाकात के दौरान भगवान विट्ठल की प्रतिमा प्रधानमंत्री को भेंट स्वरूप दी।

संजय देशमुख ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की तस्वीर शेयर की। उन्होंने लिखा, "परिवार के साथ भारत के सफल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से शिष्टाचार भेंट करना मेरे लिए सम्मान की बात थी। इस अवसर पर उन्हें श्री विट्ठल-रुक्मिणी की एक पवित्र प्रतिमा भेंट की गई। पंढरपुर की भक्ति परंपरा और

हमारी संस्कृति के प्रतीक इस प्रतिमा को भेंट करना विशेष आनंद का अनुभव था।"

उन्होंने लिखा कि देश के प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए भी, वे एक ऐसे नेता हैं जो सहजता से आम लोगों से जुड़ते हैं और हमेशा सुलभ रहते हैं। यह तथ्य विशेष रूप से सराहनीय है।

बीते दिनों शिवसेना (यूबीटी) के छह सांसद एकनाथ शिंदे के गुट में शामिल हुए। इस लिस्ट में यवतमाल-वाशिम से सांसद संजय देशमुख का भी नाम शामिल है।

संजय देशमुख ने एक प्रतिक्रिया में कहा था कि हमें आम जनता ने चुना है। विकास कार्यों के दौरान धन की कमी का सवाल उठा, इसलिए सभी सांसदों ने एक साथ बैठकर सामूहिक निर्णय लिया।

धर्मगुरु आगा सैयद कौन? खामेनेई के जनाजे में जाने से रोका गया, दिल्ली में पासपोर्ट जब्त

(जीएनएस)।

जम्मू-कश्मीर के प्रमुख शिया धर्मगुरु आगा सैयद हसन मुसावी को 2 जुलाई को दिल्ली के ~~अंतरराष्ट्रीय~~ एयरपोर्ट पर ईरान जाने से रोक दिया गया। उनके बेटे और पीडीपी विधायक आगा मुंतजिर मेहदी का दावा है कि मुसावी को तेहरान में अयातुल्लाह अली खामेनेई के जनाजे में शामिल होने के लिए बुलाया गया था, लेकिन इमिग्रेशन अधिकारियों ने उन्हें फ्लाइट में चढ़ने नहीं दिया।

इतना ही नहीं, उनका पासपोर्ट भी जब्त कर लिया गया। इस घटना के बाद कई सवाल उठ रहे हैं कि आखिर आगा सैयद हसन मुसावी कौन हैं और उन्हें ईरान जाने से क्यों रोका गया।

आगा सैयद हसन मुसावी जम्मू-कश्मीर के जाने-माने शिया धर्मगुरु हैं। घाटी में शिया समुदाय के बीच उनका बड़ा प्रभाव माना जाता है। वे धार्मिक और सामाजिक मुद्दों पर खुलकर अपनी बात रखते रहे हैं। कई बार उन्होंने कश्मीर से जुड़े मुद्दों पर भी बयान दिए हैं। वहीं इनके ऊपर कश्मीर में भारत विरोधी अभियान चलाने का भी आरोप लगता रहता है। यही वजह है कि शिया समाज में उनकी अलग पहचान है। ईरान के धार्मिक नेताओं से भी उनके अच्छे संबंध बताए जाते हैं, जिसके चलते उन्हें खामेनेई के जनाजे में शामिल होने का न्योता मिला था।

ईरान जाने से क्यों रोका गया?

आगा हसन के बेटे आगा मुंतजिर मेहदी का दावा है कि दिल्ली एयरपोर्ट पर इमिग्रेशन अधिकारियों ने उनके पिता से कहा कि वे ईरान में भारत के आधिकारिक रुख के खिलाफ कुछ नहीं बोलेंगे और कश्मीर में हुई गिरफ्तारियों का जिक्र भी नहीं करेंगे। मुंतजिर के मुताबिक, उनके पिता ने कहा कि वे सिर्फ जनाजे में शामिल होने जा रहे हैं और कोई भाषण नहीं देंगे। इसके बावजूद उन्होंने ऐसी किसी शर्त को मानने से इनकार कर दिया, जिसके बाद उन्हें फ्लाइट में चढ़ने की अनुमति नहीं मिली।

खड़ी बस को बेकाबू कैंटर ने मारी टक्कर, 5 की मौत, 12 घायल, पुलिस ने जारी की मृतकों की लिस्ट

एटा जिले में फरुर्खाबाद-एटा मार्ग पर गुरुवार देर रात एक भयानक सड़क हादसा हुआ, यहां सड़क किनारे खड़ी एक उत्तर प्रदेश परिवहन निगम (रोडवेज की) बस को पीछे से आ रहे तेज रफ्तार कैंटर ने जोरदार टक्कर मार दी। इस भयानक भिड़ंत में बस के पांच यात्रियों की मौत हो गई, जबकि 12 से ज्यादा लोग घायल हो गए, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है, इनमें कई लोगों की हालत गंभीर है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक यह दर्दनाक दुर्घटना बागवाला थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले कीलरमऊ गांव के पास रात के करीब 11:30 बजे हुई।

पीएम मोदी के बाड़मेर दौरे पर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का तीखा हमला, बोले- युवाओं का स्वाभिमान लूट रही भाजपा

(जीएनएस)।

जयपुरः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कल बाड़मेर दौरे पर पहुंच रहे हैं, जहां वे बहुप्रतीक्षित रिफाइनरी का उद्घाटन करेंगे. साथ ही युवाओं को नौकरियों के जॉइनिंग लेटर भी वितरित करेंगे. इस कार्यक्रम के लिए कई जिलों में युवाओं को जुटाने की जिम्मेदारी जिला प्रशासन को सौंपी गई है.

भाजपा सरकार द्वारा इस आयोजन को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने तीखा हमला बोला है. उन्होंने कहा कि 4 जुलाई को प्रधानमंत्री के दौरे की आड़ में जिला मुख्यालयों पर युवाओं को जबरन जुटाकर जॉइनिंग लेटर बांटने का यह भद्दा तमाशा युवाओं के स्वाभिमान पर चोट है. जिला प्रशासन को लक्ष्य देकर

भीड़ जुटाना और उनके आने-जाने-खाने पर सरकारी धन का दुरुपयोग कर राजनीति करना अनैतिक है.

युवाओं का इस्तेमालः गहलोत ने कहा कि "राजस्थान की भाजपा सरकार कान खोलकर सुन ले- आप युवाओं को नौकरी देकर कोई एहसान नहीं कर रहे। ये युवा दिन-रात मेहनत कर प्रतियोगी परीक्षाएं पास करके अपना हक हासिल करते हैं। हमारी सरकार ने भी रिकॉर्ड नौकरियां दीं, लेकिन कभी युवाओं का राजनीतिक फायदे के लिए इस्तेमाल नहीं किया."

नौटंकी वाले कार्यक्रमः उन्होंने आगे कहा कि शर्मनाक बात यह है कि प्रदेश में भर्तियां समय पर पूरी नहीं हो रही हैं, कैलेंडर के अनुसार परीक्षाएं नहीं हो रही हैं, लेकिन वीआईपी दौरों पर ऐसे नौटंकी वाले कार्यक्रम समय पर हो जाते हैं. मंच से फोटो खिंचवाकर लेटर बांट दिए जाते हैं, पर असली जॉइनिंग के लिए युवा महीनों भटकते रहते हैं.

गहलोत ने आरोप लगाया कि वसुंधरा राजे सरकार से लेकर वर्तमान भाजपा सरकार तक, भाजपा ने प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सर्कस और सरकारी सिस्टम को मजाक बना दिया है. राजस्थान का युवा इस झांसे को देख रहा है और समय आने पर इस अपमान का करारा जवाब देगा.

चंदा चोरी के खिलाफ 79 साल की उम्र में 1000 किमी. की पद यात्रा करेंगे पूर्व सीएम, अयोध्या में मंदिर निर्माण के लिए दिए थे 1.11 लाख रुपये

अयोध्या में कथित चंदा चोरी को लेकर दिग्विजय सिंह ने बड़ी घोषणा की है। दिग्विजय सिंह ने कहा कि वह महाकाल से अयोध्या तक पद यात्रा करेंगे।

(जीएनएस)।

भोपालः मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह एक बार फिर से पद यात्रा करेंगे। इस बार उनकी पद यात्रा अयोध्या में राम मंदिर में कथित चंदा चोरी को लेकर है। पूर्व सीएम ने घोषणा करते हुए कहा कि यह यात्रा पूरी तरह से गैर राजनीतिक होगी। इस यात्रा में किसी भी पार्टी का झंडा नहीं होगा। जिन लोगों की और जिन पार्टियों की आस्था राम में है वह लोग इस यात्रा में शामिल हो सकते हैं।

2 अक्टूर से शुरू होगी यात्रा

शुक्रवार को दिग्विजय सिंह ने भोपाल में मीडिया से चर्चा करते हुए कहा- 2 अक्टूबर से उज्जैन के महाकाल मंदिर से अयोध्या स्थित राम जन्मभूमि तक करीब 1000 किलोमीटर की पदयात्रा शुरू करेंगे। हालांकि उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में यह जानकारी नहीं दी है कि यह यात्रा कितने दिनों की होगी। दिग्विजय सिंह की उम्र अभी 79 साल है। ऐसे में

उनके यात्रा करने की घोषणा ने एक बार फिर से सियासत तेज कर दी हैं।

गैर-राजनीतिक होगी दिग्विजय सिंह की यात्रा

दिग्विजय सिंह ने कहा कि यह पदयात्रा पूरी तरह गैर-राजनीतिक होगी। इसमें कांग्रेस का प्रचार नहीं होगा और वे यात्रा के दौरान फेसबुक, ट्विटर समेत किसी भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल नहीं करेंगे। दिग्विजय सिंह ने कहा था कि उन्होंने राम मंदिर निर्माण के लिए 1.11 लाख रुपये का चंदा दिया था। उनके पास आज भी चंदे की रसीद और चेक की प्रति सुरक्षित है।

महाकाल मंदिर में बने गेस्ट हाउस पर भी उठाए सवाल

पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने आरएसएस और वीएचपी की आर्थिक पारदर्शिता पर भी सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि उज्जैन के महाकाल मंदिर क्षेत्र की कीमती जमीन पर आरएसएस से जुड़े ट्रस्ट ने गेस्ट हाउस बनाया। अब वहां 100 कमरों का होटल तैयार किया जा रहा है। उन्होंने दावा किया कि वहां ठहरने वालों को वीआईपी दर्शन की सुविधा मिलती है और चंदे के उपयोग की भी जांच होनी चाहिए।

क्यों की है घोषणा

दरअसल, अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए जुटाए गए चंदे में कथित अनियमितताओं के आरोप लगे हैं। इस मामले में उत्तर प्रदेश सरकार ने एक्शन लिया है। दिग्विजय सिंह भी इस मामले की निष्पक्ष जांच की मांग रहे हैं। ऐसे में दिग्विजय सिंह ने यात्रा करने की घोषणा की है। बता दें कि इससे पहले दिग्विजय सिंह अपनी पत्नी के साथ नर्मदा परिक्रमा कर चुके हैं।

अयोध्या में ग्राम प्रधान पर डीएम की बड़ी कार्रवाई, प्रशासक पद से हटाया; वित्तीय और प्रशासनिक अधिकार भी सीज

अयोध्या में सरकारी धन के उपयोग में कथित वित्तीय अनियमितताओं की शिकायत पर जिला प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई की है. डीएम ने संबंधित ग्राम प्रधान को प्रशासक पद से हटा दिया है. साथ ही उनके वित्तीय और प्रशासनिक अधिकार भी तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित कर दिए गए हैं. प्रशासन का कहना है कि मामले की विस्तृत जांच जारी है और रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी. इस फैसले के बाद जिले की पंचायतों में प्रशासनिक सख्ती को लेकर चचाएं तेज हो गई हैं.

(जीएनएस)।

अयोध्याः उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले में सरकारी धन के कथित दुरुपयोग और वित्तीय अनियमितताओं की शिकायत पर जिला प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई की है. जहां जिलाधिकारी ने ग्राम पंचायत गरेली के ग्राम प्रधान राज नारायण को प्रशासक पद से हटा दिया है. इसके साथ ही उनके वित्तीय और

प्रशासनिक अधिकार भी तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित कर दिए गए हैं. प्रशासन का कहना है कि यह कार्रवाई प्रारंभिक जांच में सामने आए तथ्यों के आधार पर की गई है और मामले की विस्तृत जांच अभी जारी है.

क्या है पूरा मामला?

जानकारी के अनुसार, ग्राम पंचायत गरेली में सरकारी धन के उपयोग और पंचायत के विकास कार्यों में कथित अनियमितताओं को लेकर जिला प्रशासन से शिकायत की गई थी. शिकायत मिलने के बाद संबंधित अधिकारियों से जांच कराई गई. प्रारंभिक जांच में शिकायत को गंभीर मानते हुए जिलाधिकारी ने तत्काल प्रशासनिक कार्रवाई का फैसला लिया.

डीएम ने जारी किया आदेश

जिलाधिकारी के आदेश के तहत ग्राम प्रधान राज नारायण को प्रशासक के पद से हटा दिया गया है. साथ ही उनके वित्तीय और प्रशासनिक अधिकार भी तत्काल प्रभाव से वापस ले लिए गए हैं. यानी अब वह पंचायत के बैंक खाते के संचालन, सरकारी धन के उपयोग या किसी प्रशासनिक निर्णय में भाग नहीं ले सकेंगे. हालांकि मामले की जांच पूरी होने के बाद आगे की कार्रवाई नियमानुसार की जाएगी.

जांच के बाद तय होगी आगे की कार्रवाई

प्रशासन का कहना है कि फिलहाल यह कार्रवाई प्रारंभिक जांच के आधार पर की गई है. विस्तृत जांच रिपोर्ट आने के बाद यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो संबंधित ग्राम प्रधान के खिलाफ नियमानुसार आगे की कानूनी और प्रशासनिक कार्रवाई भी की जा सकती है. वहीं यदि जांच में आरोप सही नहीं पाए जाते हैं तो नियमों के अनुसार आगे का निर्णय लिया जाएगा. हालांकि जिला प्रशासन ने साफ किया है कि पंचायतों में सरकारी धन के उपयोग में पारदर्शिता बनाए रखना उसकी प्राथमिकता है. यदि किसी भी पंचायत में सरकारी धन के दुरुपयोग या वित्तीय अनियमितता की शिकायत मिलती है तो उसके खिलाफ नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी. डीएम की इस कार्रवाई के बाद जिले की अन्य ग्राम पंचायतों में भी प्रशासनिक सख्ती को लेकर चचाएं तेज हो गई हैं.

अयोध्या के बाद बदरीनाथ धाम में चढ़ावे में हेरा-फेरी के आरोप, मंदिर समिति ने बैठाई जांच; जारी की नई गाइडलाइन

बदरीनाथ धाम में दान और चढ़ावे की रकम में हेराफेरी के गंभीर आरोप लगे हैं, जिसके बाद श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति ने जांच समिति गठित कर विभागीय जां ...और पढ़ें

(जीएनएस)।

गोपेश्वर (चमोली)। अयोध्या में राम मंदिर के बाद चमोली जिले में स्थित बदरीनाथ धाम में भी श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के कर्मचारियों पर दान और चढ़ावे की रकम में हेराफेरी के गंभीर आरोप लगाए गए हैं।

मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए मंदिर समिति के स्तर से इसकी विभागीय जांच शुरू कर दी गई है। साथ ही गाइडलाइन जारी कर दान व चढ़ावे को लेकर सतर्कता बरतने को कहा गया है।

वहीं, मंदिर समिति के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी का कहना है कि जांच में यदि कोई भी कर्मचारी दोषी पाया जाता है तो उसके विरुद्ध नियमानुसार कठोर एवं प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

बताया गया कि भैरव सेना नामक संगठन ने दान-चढ़ावे में हेराफेरी को लेकर एक शिकायती पत्र मंदिर समिति के सीईओ को दिया है।

हालांकि, संगठन ने जो आरोप लगाए हैं, उनके पक्ष में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं कराया है। फिर भी मंदिर समिति की ओर से जांच समिति गठित करने के साथ सीसीटीवी आदि को खंगाला जा रहा है।

बदरीनाथ धाम को देश के चारों धाम में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है और देश-विदेश के करोड़ों लोगों की आस्था इससे जुड़ी हुई है। ऐसे में यदि बदरीनाथ मंदिर के भीतर ही चढ़ावे और दान के पैसों में हेराफेरी के आरोप लगते हैं तो यह बेहद चिंताजनक है।

यही वजह है कि अयोध्या में दान चोरी प्रकरण के बाद बदरीनाथ व केदारनाथ धाम सहित अन्य मंदिरों की व्यवस्था को देखने वाली समिति भी सर्तक हो गई है।

इसी कड़ी में श्री बदरीनाथ-

केदारनाथ मंदिर समिति के सीईओ सोहन सिंह रांगड़ की ओर से जारी आदेश में समिति के अधीनस्थ मंदिर, धर्मशाला, कार्यालयों व खजाने में प्रभारी अधिकारियों को गाइडलाइन जारी कर पारदर्शिता बरतने को कहा गया है।

अधिकारियों को विशेष सर्तकता बरतने के साथ निगरानी रखने के लिए भी कहा गया है। साथ ही आगाह किया गया है कि किसी स्तर पर लापरवाही पाए जाने पर संबंधित अधिकारियों-कर्मचारियों के विरुद्ध कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

श्रद्धालु गिनते हैं दान की राशि

बदरीनाथ धाम में दान की राशि गिनने के लिए मंदिर कर्मचारियों के साथ श्रद्धालुओं को भी लगाया जाता है। दान पात्रों में डाली गई राशि को वहां तैनात श्रद्धालुओं व मंदिर कर्मचारियों के सामने खाली किया जाता है।

कर्मचारी महासंघ ने की निष्पक्ष जांच की मांग

इस प्रकरण में अब श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति कर्मचारी महासंघ ने भी मोर्चा संभाल लिया है।

सीसीटीवी व मंदिर के वरिष्ठ अधिकारियों की निगरानी में होने वाली गिनती के बाद राशि वहीं पर मौजूद बैंक कर्मचारी के सुपुर्द कर दी जाती है। बैंक कर्मचारी इस राशि की दोबारा गिनती कर उसे जमा कराता है।

जिन श्रद्धालुओं को स्वच्छा से गितनी में लगाया जाता है, उनका रिकार्ड भी मंदिर समिति के पास मौजूद होता है।

यात्रा में श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने के साथ हर दूसरे दिन व यात्रियों की संख्या कम होने पर दो से तीन दिन महासंघ के अध्यक्ष विजेंद्र बिष्ट ने समिति को पत्र लिखकर इस मामले की निष्पक्ष, पारदर्शी और समयबद्ध जांच कराने का अनुरोध किया है।

उन्होंने कहा कि चढ़ावा, दान सामग्री और अन्य माध्यमों से प्राप्त होने वाली आय में यदि कहीं भी कोई गड़बड़ी हुई है तो उसकी गंभीरता से जांच कराकर दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए।

उनका यह भी कहना है कि जांच में आरोप असत्य या भ्रामक पाए जाने पर ऐसे तत्वों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

सीईओ बोले, सीसीटीवी में फिलहाल कुछ स्पष्ट नहीं, जांच जारी

श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के मुख्य कार्याधिकारी सोहन सिंह रांगड़ ने बताया कि इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हो रहे दावों और भैरव सेना नामक संगठन के शिकायती पत्र का संज्ञान लिया गया है।

प्राथमिक तौर पर जब अंदर के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली गई तो उसमें फिलहाल कुछ भी स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा।

बावजूद इसके विभागीय स्तर पर तथ्यों की पूरी गंभीरता के साथ जांच की जा रही है। हर पहलू को बारीकी से परखा जा रहा है। संबंधित व्यक्तियों का जवाब तलब भी किया गया है।

दोषियों के विरुद्ध होगी कड़ी कार्रवाई : द्विवेदी

श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने कहा कि इंटरनेट मीडिया में बदरीनाथ मंदिर में चढ़ावे एवं दान में कथित हेराफेरी के जो आरोप लगाए जा रहे हैं, उन्हें गंभीरता से लिया गया है।

पूरे प्रकरण की निष्पक्ष एवं तथ्यपरक जांच के लिए समिति गठित करने के साथ स्पष्टीकरण मांगा गया है। जांच में यदि कोई भी कर्मचारी दोषी पाया जाता है तो उसके विरुद्ध नियमानुसार कठोर एवं प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

द्विवेदी ने स्पष्ट किया कि इंटरनेट मीडिया में जिस कर्मचारी को उनका निजी सचिव बताया जा रहा है, वह पूरी तरह गलत है। वह मंदिर समिति का नियमित कर्मचारी है और वैयक्तिक सहायक के रूप में पूर्व में भी मंदिर समिति के तीन अध्यक्षों के साथ कार्य कर चुका है।

न्यूमरोलॉजी पर आधारित प्रणिता घोड़े की अनूठी कला प्रदर्शनी 'ग्रह पूर्ति यन्त्रम' का मुंबई में श्रीमती मंजू लोढ़ा द्वारा शुभारम्भ

(जीएनएस)।

मुंबई, 3 जुलाई। न्यूमरोलॉजी पर आधारित चित्रकला की नई विधा की शुरूआत करने वाली मशहूर चित्रकार सुश्री प्रणिता घोड़े की अनूठी कला प्रदर्शनी "ग्रह पूर्ति यन्त्रम" 2 जुलाई, 2026 से मुंबई में शुरू हुई, जो आगामी 5 जुलाई, 2026 तक सभी दर्शकों के निःशुल्क अवलोकनार्थ खुली रहेगी। प्रदर्शनी का उद्घाटन सुप्रसिद्ध समाज सेविका, वरिष्ठ साहित्यकार और लोढ़ा फाउंडेशन की अध्यक्षा श्रीमती मंजू लोढ़ा ने किया। इस चार दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्रीमती मंजू लोढ़ा ने कहा कि कला जीवन में बड़े उद्देश्यों के लिए हमें प्रेरित करती है।

यह जानकारी देते हुए मुंबई महानगर की प्रमुख सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था और प्रदर्शनी के आयोजक "आकृति आर्ट फाउंडेशन" के डायरेक्टर मनमोहन जायसवाल ने बताया कि यह अनूठी कला प्रदर्शनी मुंबई के भूलाभाई देसाई रोड स्थित सिमरोजा आर्ट गैलरी में लगाई गई है। उन्होंने बताया कि चित्रकार प्रणिता घोड़े की पेंटिंग्स विशेषकर प्रत्येक इंसान के लिए अलग होती हैं। वे हर व्यक्ति की जन्म तिथि के गणितीय समीकरण के आधार पर पेंटिंग्स का सृजन करती हैं, जो उसके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। 2 जुलाई, 2026 क की शाम इस कला प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में अन्य विशिष्ट अतिथियों के रूप में जस्टिस के. के. तातेड और वरिष्ठ उद्योगपति गणपत कोठारी के अलावा समाजसेवी आदित्य सक्सेरिया, श्रीमती लीना चोपड़ा, डॉली ठाकोर, शहनाज खान, मालती जैन, आदित्य मोहता, पीयूष शर्मा, रमेश साबू, सुमन पारेख, प्रियांक पारेख , प्रीति शाह, भूषण जाधव, मेजर अरुण सिन्हा, विपुल दवे, लेखक विट्ठल घोड़े, चित्रकार एवं दिग्दर्शक शीतल दोड़के, गजानन लाहूडकर और विजय गायगवड़ी सहित विभिन्न प्रबुद्ध कला प्रेमी मौजूद रहे। समारोह का संचालन सुश्री गजल शेख ने किया। उल्लेखनीय है कि सुश्री प्रणिता पिछले 15 वर्षों से न्यूमरोलॉजी के अंतर्गत भाग्यांक और मूलांक पर आधारित पेंटिंग करती हैं । इस बारे में सुश्री प्रणिता ने बताया कि पिछले 15 वर्षों के अध्ययन, अनुभव और निरंतर शोध के आधार पर उन्होंने जन्मतिथि के अंकों पर आधारित व्यक्तिगत 'ग्रहपूर्ति यंत्र' की संकल्पना विकसित की है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति की जन्मतिथि के अंकों के संतुलन, उनके गणितीय सम्बंधों का अध्ययन तथा उन्हें कलात्मक रूप में कैनवास पर प्रस्तुत करना शामिल है। उनका मानना है कि यह कला, न्यूमरोलॉजी और रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक अनूठा संगम है। उन्होंने कहा कि उनकी कला न केवल एक विजुअल ब्यूटी है, बल्कि यह जीवन में अनुकूलता, सुख-शांति और समृद्धि भी लाती है। अपनी तरह की अनूठी इस प्रदर्शनी को देखने के लिए बड़ी संख्या में कला प्रेमी निरंतर पहुँच रहे हैं।

मुंबई में न्यूमरोलॉजी पर आधारित चित्रकार सुश्री प्रणिता घोड़े की अनूठी कला प्रदर्शनी "ग्रह पूर्ति यन्त्रम" का शुभारम्भ करते हुए सुप्रसिद्ध समाज सेविका श्रीमती मंजू लोढ़ा। दो अन्य तस्वीरों में मीडिया से संवाद और विभिन्न विशिष्ट अतिथियों के दृश्य।

सैलरी 15 हजार और खरीद लिया 25 लाख का प्लॉट, लवकुश मिश्रा के 'अवैध' आशियाने पर कसा शिकंजा, पत्नी को नोटिस

अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में दान राशि की कथित चोरी के मुख्य आरोपी लवकुश मिश्रा की पत्नी सुप्रिया मिश्रा को अयोध्या विकास प्राधिकरण (अऊअ) ने नोटिस दिया है। एडीए ने कहा है कि उन्होंने सोहावल में अपना घर बनाने में नियमों का उल्लंघन किया है।

(जीएनएस)।

लखनऊ/अयोध्याः राम मंदिर में दान की कथित चोरी के मामले के साथ जुड़ी नई-नई बातें सामने आ रही हैं। अब अयोध्या विकास प्राधिकरण (अऊअ) ने एक कार्रवाई की है। प्राधिकरण ने दान में हेराफेरी के मामले के मुख्य आरोपी लवकुश मिश्रा की पत्नी सुप्रिया मिश्रा को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। यह नोटिस उनके सोहावल में बन रहे एक घर के संबंध में है। प्राधिकरण का आरोप है कि इस भवन के निर्माण में नियमों का उल्लंघन किया गया है।

जारी हो सकता है मकान ढहाने का नोटिस

प्राधिकरण ने सुप्रिया मिश्रा को दिए गए नोटिस में कहा है कि उनके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए? उनसे 15 दिन में जवाब देने के लिए कहा गया है। अधिकारियों ने संकेत दिया है कि यदि वे निर्धारित समय में संतोषजनक जवाब नहीं देती हैं तो प्राधिकरण उनका निमार्णाधीन मकान गिराने के लिए नोटिस जारी करने का कदम उठा सकता है।

प्लाट 25 लाख का, रजिस्ट्री 8.8 लाख की!

अयोध्या विकास प्राधिकरण को मिली जानकारी के अनुसार, लवकुश की सैलरी 15,000 रुपये मासिक थी। उसने पिछले साल 16 अक्टूबर को अयोध्या जिले के सोहावल इलाके के बनीपुर में 1000 वर्ग फुट का प्लॉट खरीदा था। सेल डीड में इसकी रजिस्टर्ड कीमत 8.8 लाख रुपये बताई गई है। हालांकि स्थानीय लोगों का दावा है कि उस इलाके में इस आकार के प्लॉट की बाजार कीमत आम तौर पर 24 लाख से 25 लाख रुपये के आसपास होती है। इससे प्लाट की वास्तविक कीमत और इसके लिए जुटाए गए पैसे के स्रोत पर सवाल उठ रहे हैं।

पड़ोसी भवन गिरने की आशंका से परेशान

लवकुश मिश्रा ने फरवरी में भूमि पूजन के बाद ग्राउंड फ्लोर और पहली मंजिल के स्ट्रक्चर का निर्माण शुरू किया था। स्थानीय लोगों के अनुसार मजदूर 30 जून तक निर्माण का काम करते रहे। लवकुश के पड़ोसी राज कुमार पांडे ने कहा, 'मैं उनसे फरवरी में पूजा के दौरान मिला था। हाल ही में मीडिया के जरिए मुझे विवाद में उनकी भूमिका के बारे में पता चला। हम राज्य सरकार से अपील करते हैं कि उनकी संपत्ति को तोड़ा न जाए, क्योंकि इससे उनके घर के बगल में बने मकान भी क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। अधिकारी इस संपत्ति को सील कर सकते हैं ताकि कोई इसका इस्तेमाल न कर सके।'

कैसे खरीदी गई महंगी संपत्ति?

प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अनुराग जैन ने कहा है कि इंजीनियरिंग स्टाफ की ओर से निरीक्षण के बाद यह नोटिस जारी किया गया। लवकुश मिश्रा राम मंदिर में नगद राशि गिनने का काम करने वाले आउटसोर्स कर्मचारी थे। वे फिलहाल दान की कथित चोरी के मामले में जेल में बंद हैं। अयोध्या पुलिस ने उनके ठिकानों से करीब 14.3 लाख रुपये बरामद किए हैं। मामले की जांच कर रही एसआईटी को शक है कि यह संपत्ति गिरफ्तारी से पहले कथित तौर पर गबन किए गए पैसों से खरीदी गई हो सकती है। सूत्रों ने बताया कि राम मंदिर में हेराफेरी के मामले में अन्य आरोपियों के खिलाफ भी इस तरह की कार्रवाई की जा सकती है।

रेलवे कर्मचारी बनकर ले लिया 15 लाख का लोन, लखनऊ में बड़ा बैंक फ्रॉड; खुलासे से हर कोई हैरान

आरोपियों ने रेलवे के फर्जी दस्तावेज लगाकर बीओआई से 15 लाख का लोन ले लिया। दस्तावेजों की जांच करने पर फजीर्वाड़ा खुला। शाखा प्रबंधक ने मलिहाबाद थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। आगे पढ़ें पूरी खबर...

(जीएनएस)।

राजधानी लखनऊ में बैंक ऑफ इंडिया की शाखा ढेडेमऊ, मलिहाबाद के ब्रांच मैनेजर सुधेंदु रंजन तिवारी ने तीन लोगों पर रेलवे के फर्जी दस्तावेज लगाकर 15 लाख रुपये लोन लेने का आरोप लगाया है। कोर्ट के आदेश पर मलिहाबाद पुलिस ने तीन लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है।

सुधेंदु ने बताया कि 12 अगस्त 2024 को माल के बाजार गांव निवासी रामपाल ने बैंक में 15 लाख के पर्सनल लोन के लिए आवेदन किया था। लोन के गारंट राजाजीपुरम के भपटामऊ निवासी रघुवीर कमला और ड्यू डेलीगेंस एजेंसी गोल्ड रश सर्विसेज थी। रघुवीर और रामपाल ने बैंक में अपना आधार कार्ड, पैन कार्ड और मंडल रेल प्रबंधक की ओर से जारी पहचान पत्र लगाए थे।

विज्ञापन

इस पर बैंक ने रामपाल को लोन स्वीकृत कर दिया था। बैंक ने 15 लाख रुपये आरोपी के खाते में ट्रांसफर की थी। सुधेंदु ने बताया कि जब उन्होंने बैंक में लगाए गए रेलवे के पहचान पत्र और दस्तावेजों की जांच की तो वे फर्जी निकले। विभाग से संपर्क करने पर पता चला कि रामपाल और रघुवीर नाम के लोग रेलवे में काम नहीं करते हैं।

ब्रांच मैनेजर का यह भी आरोप है कि तब से अभी तक आरोपी रामपाल ने बैंक को लोन की एक भी किस्त नहीं दी। संपर्क करने पर आरोपी ने टालमटोल करना शुरू कर दिया। उनका कहना है कि रामपाल ने लोक धन का गबन किया है। इसमें उसका साथ रघुवीर और एजेंसी ने दिया है।

सुधेंदु ने मामले की अर्जी कोर्ट में दायर की। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने तीनों पर कार्रवाई की। इंस्पेक्टर सुरेंद्र भाटी ने बताया कि मामले की तफ्तीश की जा रही है। बैंक ठगी संबंधी सभी दस्तावेज मांगे गए हैं। साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

PRGI No.: UPHIN/25/A1698 Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh.
and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : VINOD KUMARI
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

नवसर्जन संस्कृति

सम्पादकीय

साझेदारी और अधिक मजबूत करते भारत–जापान

दिल्ली के हैदराबाद हाउस में आयोजित 'भारत–जापान वार्षिक समिट' में हिस्सा लेने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जापान की प्रधानमंत्री सनाए इकायची ने बृहस्पतिवार को संयुक्त वार्ता की जिसमें दोनों नेताओं ने दोनों देशों की साझेदारी को और अधिक सुदृढ़ करने का संकल्प लिया।

दरअसल हैदराबाद हाउस में ही दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के बीच द्विपक्षीय वार्ता भी हुई जिसमें पिछले एक वर्ष में जो 120 नए व्यावसायिक समझैते हुए हैं उन पर चर्चा हुई। असल में इन समझौतों के फलीभूत होने पर भारत में जापान द्वारा 10 बिलियन डालर से ज्यादा भारत में निवेश किया जाना है। इसके अतिरिक्त दोनों देशों के नेताओं ने निवेश, रक्षा, सेमीवंडक्टर, व्रिटिकल मिनरल्स, सप्लाई चेन, समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों पर वार्ता हुई। आज दुनिया के लिए जितने भी महत्वपूर्ण मुद्दे महत्वपूर्ण हैं उन सभी पर दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने चर्चा की। मजे की बात तो यह है कि भारत के लिए रूस जितना महत्वपूर्ण है सुरक्षा क्षेत्र में मित्र है, जापान उतना ही अच्छा सहयोगी ढांचागत विकास के क्षेत्र में है।

भारत में सुजुकी प्लांट हो या मेट्रो रेल, सब वुछ जापान के सहयोग से ही संभव हुआ है। जापान ने हमेशा भारत के साथ ईमानदारी से व्यावसायिक रिश्ते को आगे बढ़ाया है। इसी आशा और विश्वास के कारण भारत ने निवेश, व्रिटिकल मिनरल और सेमी वंडक्टर के लिए जापान से सहयोग की उम्मीद की है। जापान भू–भाग और जनसंख्या की दृष्टि से तो बहुत छोटा देश है किन्तु सामरिक विश्लेषण, निवेश, इलेक्ट्रानिक, एआई और ढांचागत विकास में एक निपुण, ऐसा देश है जो मित्रता अर्थ भी समझता है और मित्रता निभाना भी जानता है। भारत और जापान क्वाड यानि चतुर्भुज सुरक्षा संवाद के सदस्या भी हैं। क्वाड में जितने भी सदस्य हैं सभी की सामान्य रूप से चीन की वुटिल वूटनीतिक फरेब से चिन्ता है। एक तरफ जहां चीन भारत की सीमाओं पर दशकों पूर्व हड़पी हुई जमीन पर रक्षा–ढांचे विकसित कर रहा है और भारत के पड़ोसियों को बहला–फुसलाकर भारतीय हितों के खिलाफ षड्यंत्र करता है ठीक उसी तरह वह जापान के वुछ द्वीपों जैसे सेनकाकवू द्वीप समूह पर अपना दावा करता है। यह द्वीप जापान के ओकीनावा प्रान्त का हिस्सा है और एक प्रशासक भी जापान सरकार का ही है। किन्तु चीन ने इस द्वीप का नामकरण 'दियाओयू' के नाम से अपना अधिकार जमाने के लिए कर रखा है। मतलब यह कि भारत और जापान दोनों ही चीन की विस्तारवादी वूटनीति से त्रस्त है इसलिए दोनों देशों के बीच संबंध प्रगाढ़ हो रहे हैं। सच तो यह है कि क्वाड का गठन ही जापान की पहल पर हुआ है। चीन की समुद्री सीमाओं में दखल की गतिविधियों को देखते हुए भारत और जापान का एक साथ रहना दोनों के हित में है। बहरहाल जापान के सम्बन्ध भारत से न सिर्प ऐतिहासिक हैं बल्कि सांस्वृतिक भी हैं। बौद्ध धर्म के अनुयायी जापान में ज्यादा हैं और इसी वजह से जापान के लोग भारत से ज्यादा स्नेह भी करते हैं। किन्तु जहां तक व्यवसाय एवं रणनीतिक सम्बन्धों का सवाल है, भारत और जापान के बीच सम्बन्धों की नींव आपसी समझ, विश्वसनीयता एवं भरोसे पर टिकी हुई है। जापान जानता है कि वह भारत में जो भी निवेश करता है, वह सुरक्षित होता है। भारत भी ईमानदारी से जापानी निवेश का लाभ उठाता है और जापान के साथ किसी भी तरह विश्वासघात न होने की गारंटी देता है। विदेशों में भारत और जापान के बीच प्रोजेक्ट साझेदारी में सफलतापूर्वक पूर्ण हुए हैं। वुल मिलाकर भारत–जापान के सहयोग मैत्री देश–विदेश में इतने सफल साबित हुए हैं कि इसे 'साझावाद' कहें तो ज्यादा उचित होगा।

'न्यूक्लियर बम न होता तो कोई पूछता भी नहीं', इंटरनेशनल मंच पर किसने उतारी पाकिस्तान की पतलून?

(जीएनएस)।

दुनिया भर में पाकिस्तान अपनी कूटनीति को मजबूत दिखाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उसकी असली तस्वीर अब भी चिंता बढ़ाने वाली है। सिंगापुर के विदेश मंत्रालय के पूर्व सचिव बिलाहारी कौसिकन ने पाकिस्तान को लेकर बेहद सख्त टिप्पणी की है। उनका कहना है कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मिली छोटी–मोटी कूटनीतिक सफलताएं इस सच को नहीं बदल सकतीं कि पाकिस्तान आज भी एक विफल राष्ट्र (ऋीं र३ी) बनने की कगार पर खड़ा है।

उन्होंने यह बात 'नेशनल प्रेस फाउंडेशन' के एक कार्यक्रम में कही। कार्यक्रम का विषय था 'अस्थिर वैश्विक भू–राजनीतिक समय में दृष्टिकोण बनाए रखना'। इसी दौरान एक पाकिस्तानी पत्रकार ने देश के भविष्य को लेकर सवाल पूछा, जिसके जवाब में कौसिकन ने पाकिस्तान की हालत पर खुलकर अपनी राय रखी।

'कूटनीति से पेट नहीं भरता'

बिलाहारी कौसिकन ने कहा कि पाकिस्तान की सेना और उसका कूटनीतिक तंत्र वैश्विक राजनीति में मौके तलाशने में काफी तेज है। इसी वजह से पाकिस्तान समय–समय पर अमेरिका जैसे बड़े देशों के साथ अपने रिश्तों को बेहतर बनाने में सफल भी रहा है। लेकिन उन्होंने साफ कहा कि विदेश नीति की कामयाबी से देश की जनता की समस्याएं खत्म नहीं होतीं। अगर अर्थव्यवस्था कमजोर हो, बेरोजगारी बढ़ रही हो और आम लोगों की जिंदगी मुश्किल हो, तो सिर्फ कूटनीतिक सफलता से देश आगे नहीं बढ़ सकता।

'फेल्ड स्टेट' बनने के बेहद करीब पाकिस्तान

कौसिकन के मुताबिक पाकिस्तान लंबे समय से एक 'फेल्ड स्टेट' बनने की सीमा पर खड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि यह राहत की बात है कि पाकिस्तान अब तक पूरी तरह ढहा नहीं है, लेकिन इसकी मौजूदा स्थिति बेहद नाजुक बनी हुई है। उन्होंने

चेतावनी दी कि अगर पाकिस्तान ने अपनी अंदरूनी समस्याओं और कमजोर संस्थाओं को मजबूत नहीं किया, तो आने वाले समय में हालात और ज्यादा खराब हो सकते हैं।

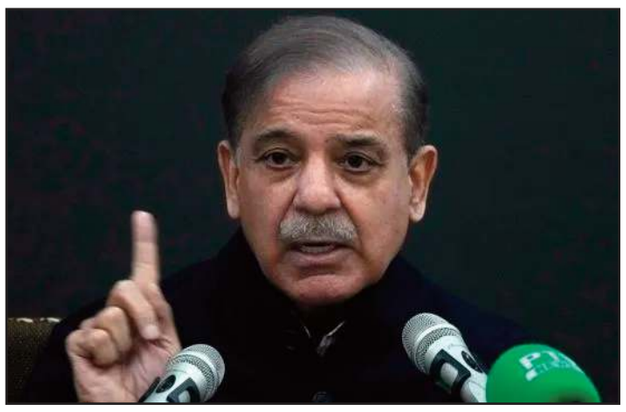

आतंकवाद सबसे बड़ी कमजोरी

सिंगापुर के पूर्व राजनयिक ने कहा कि अमेरिका और पश्चिमी देशों का पाकिस्तान पर पूरा भरोसा आज भी नहीं बन पाया है। उनकी राय में इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि पाकिस्तान की जमीन पर अब भी कई कट्टरपंथी और आतंकवादी संगठन एक्टिव हैं, जो पश्चिमी देशों के लिए सुरक्षा चिंता बने हुए हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की सेना की रणनीतिक क्षमता अपनी जगह है, लेकिन आतंकी संगठनों को सालों तक बढ़ावा देना और आर्थिक कुप्रबंधन देश की सबसे बड़ी गलतियों में शामिल है। जब तक इन समस्याओं का समाधान नहीं होगा, तब तक पाकिस्तान संकट से बाहर नहीं निकल पाएगा।

आर्थिक संकट ने तोड़ी कमर

पाकिस्तान इस समय गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रहा है। देश में महंगाई लगातार बढ़ रही है और ईंधन की कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच चुकी हैं। हालात ऐसे हैं कि पाकिस्तान अपनी आर्थिक जरूरतों के लिए अंतरराष्ट्रीय कर्ज और क्ट्रऋ के बेलआउट पैकेज पर काफी हद तक निर्भर हो गया है। विदेशी मुद्रा भंडार भी लगातार दबाव में है, जिससे आयात और विकास परियोजनाओं पर असर पड़ रहा है। आर्थिक कुप्रबंधन ने आम लोगों की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं।

सुरक्षा और मानवाधिकार भी बड़ी चुनौती

आर्थिक संकट के साथ–साथ पाकिस्तान सुरक्षा के मोर्चे पर भी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। जिन उग्रवादी संगठनों को कभी रणनीतिक कारणों से बढ़ावा दिया गया था, वही अब देश के लिए बड़ी सुरक्षा समस्या बन चुके हैं। इसके अलावा धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा और जबरन धर्म परिवर्तन जैसे मुद्दों को लेकर भी पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार आलोचना हो रही है। यूनाइटेड नेशन्स समेत कई वैश्विक मंचों पर इन मामलों को गंभीर चिंता का विषय बताया गया है।

पाकिस्तान के लिए सख्त संदेश

ये पहली बार नहीं है जब पाकिस्तान की अंतर्राष्ट्रीय मंच पर घनघोर बेइज्जती हुई हो। बावजूद इसके पाकिस्तान सुधरने की कोशिश करता नहीं दिख रहा। सरकार पंगु है और जनता भूख से तड़प रही है। ऐसे में इस तरह के बयान पाकिस्तान की जनता की आंख खोल सकते हैं।

बेबी डू डाई डू : भारत की पहली 'देसी हिटवुमन' की कहानी, हुमा कुरैशी का दिखा सुपारी किलर अवतार

फिल्मः बेबी डू डाई डू, स्टारकास्टः हुमा कुरैशी, सिकंदर खेर, चंकी पांडे, सीमा पाहवा, डायरेक्टरः नचिकेत सामंत, रन टाइमः 2 घंटे 05 मिनट, स्टारः 3

बॉलीवुड में पिछले कुछ वर्षों में महिला–केंद्रित फिल्मों ने अपनी अलग पहचान बनाई है। इसी कड़ी में निर्देशक नचिकेत सामंत की फिल्म 'बेबी डू डाई डू' एक बिल्कुल ही अलग किस्म का और दिलचस्प कॉन्सेप्ट लेकर आती है। ये फिल्म एक ऐसी महिला सुपारी किलर की कहानी है, जो बोल और सुन नहीं सकती लेकिन अपने साहस, सूझबूझ और एक्शन से हर मुश्किल का सामना करती है।

ये सिर्फ एक क्राइम थ्रिलर नहीं बल्कि डार्क कॉमेडी, मिस्ट्री और हाई–ऑक्टेन एक्शन का ऐसा मिश्रण है, जो दर्शकों को शुरूआत से अंत तक बांधे रखने की कोशिश करता है। इस रिव्यू में आइए जानते हैं कैसी है ये फिल्म ?

क्या है फिल्म 'बेबी डू डाई डू' की कहानी?

–कहानी शुरू होती है दो जुड़वा लड़कियों से जिनमें से एक का नाम बेबी है, जो बचपन से ही गूंगी और बहरी है। दोनों लड़कियां अपने घर के नजदीक एक खाली पड़े 5 स्टार होटल में घूमने जाती हैं। वहां पर दोनों एक मर्डर होते हुए देख लेती हैं। इसके बाद हत्यारे ने बेबी की बहन को गला घोंट के मार दिया। तभी से बेबी बदले की आग में जलने लगती है फिर वह पीएम जैन से संपर्क में आती है जो उसको सुपारी किलिंग की काली दुनिया में धकेल देता है।

–बेबी अपने काम में माहिर है और बहुत ही सफाई से मर्डर करती है, खास बात ये है कि मर्डर के लिए वह छाते का इस्तेमाल करती है जो देखने में दिलचस्प लगता है। दूसरी खासियत ये है कि बेबी बोल और सुन नहीं सकती लेकिन उसकी खामोशी ही उसकी सबसे बड़ी ताकत बन जाती है। बेबी एक के बाद एक मर्डर की

सुपारी लेती जाती है, हत्याओं का सिलसिला चल पड़ता है लेकिन उसका असली मकसद उसकी बहन के हत्यारे को ढूंढना है। क्या वह अपने मकसद में कामयाब हो पाएगी या नहीं इसके लिए आपको देखनी पड़ेगी ये फिल्म।

फिल्म की स्टारकास्ट और उनका दमदार अभिनय

–सबसे पहले बात करते है फिल्म में लीड रोल निभाने वाली हुमा कुरैशी की जिन्होंने बिना डायलॉग के अपने हाव–भाव, बॉडी लैंग्वेज और दमदार स्क्रीन प्रेजेंस के दम पर बेबी के किरदार को बेहद सशक्त और प्रभावशाली बनाया है। एक प्रोफेशनल कान्ट्रैक्ट किलर के साथ बदले की आग में जलती एक बहन और अपने पति के प्यार को संभालने वाली बेबी को 3 अलग रूपों में दशार्ने का सफल प्रयास किया गया है। ये उनके करियर के बेहतरीन प्रदर्शनों में से एक कहा जा सकता है।

–सिकंदर खेर अपने किरदार में पूरी तरह जमे नजर आते हैं और फिल्म को मजबूत सहारा देते हैं। उनकी स्क्रीन प्रेजन्स काफी अच्छी है। एक शातिर बिल्डर जफर के किरदार में दर्शकों के दिल में जगह बनाने में वह सफल रहे हैं।

–चंकी पांडे ने फिल्म में बेबी के पप्पा पीएम जैन का किरदार निभाया है और इस रूप में दर्शकों को वह एकदम अलग अंदाज से प्रभावित करते हैं जबकि सीमा पाहवा हमेशा की तरह सहज और असरदार अभिनय करती हैं और इस फिल्म में भी उन्होंने वही सहजता दिखाई है।

–विद्या मालवडे और हिमांशु मलिक अपने–अपने किरदारों के साथ न्याय करते हैं। रूपेश बने, अरुण कुशवाह, मरुधर शेखावत और रचित सिंह भी कहानी को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं और अपने किरदारों को विश्वसनीय बनाते हैं।

निर्देशन और तकनीकी पहलू

–निर्देशक नचिकेत सामंत ने एक अलग और साहसिक विषय को मनोरंजक अंदाज में पर्दे पर उतारा है। उन्होंने क्राइम, मिस्ट्री, डार्क ूमर और एक्शन के साथ ईमोशनल रोमांस का संतुलन बनाए रखा है। फिल्म की रफ्तार एक दो जगह छोड़कर अधिकांश समय बनी रहती है और कहानी कहीं भी अनावश्यक रूप से भटकती नहीं है।

–फिल्म की सिनेमैटोग्राफी मुंबई के अंडरवर्ल्ड के माहौल को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। एक्शन सीक्वेंस स्टाइलिश हैं और बैकग्राउंड स्कोर सस्पेंस को और अधिक प्रभावशाली बनाता है। एडिटिंग भी चुस्त है, जिसकी वजह से 2 घंटे 5 मिनट की फिल्म कहीं भी बोझिल महसूस नहीं होती।

फाइनल वर्डिक्ट

'बेबी डू डाई डू' मूवी एक अलग सोच के साथ बनाई गई मनोरंजक क्राइम थ्रिलर है, जिसकी सबसे बड़ी ताकत इसकी कहानी और हुमा कुरैशी का शानदार अभिनय है। फिल्म सस्पेंस, एक्शन, थ्रिल का संतुलित मिश्रण पेश करती है और कहानी में कई अप्रत्याशित मोड़ दर्शकों को अंत तक बांधे रखते हैं। यदि आप सस्पेंस और थ्रिल से भरपूर, स्टाइलिश और कुछ नया देखने के शौकीन हैं, तो ये फिल्म आपकी वॉचलिस्ट में जरूर होनी चाहिए।

एक हजार दिन,लाखों जिंदगियां और 4 बड़े सवाल! फिलिस्तीनी राजदूत ने दुनिया से पूछा- आखिर कब मिलेगा जवाब

(जीएनएस)।

गाजा युद्ध शुरू हुए 3 जुलाई को 1000 दिन पूरे हो चुके हैं। इस मौके पर भारत में फिलिस्तीन के दूतावास ने एक लंबा लेख जारी किया है। यह लेख भारत में फिलिस्तीन के राजदूत अब्दुल्ला एम. अबू शावेश ने लिखा है।

इसमें उन्होंने गाजा युद्ध, इजरायल–फिलिस्तीन संघर्ष और अंतरराष्ट्रीय राजनीति से जुड़े कई बड़े सवाल उठाए हैं।यह लेख किसी अदालत का फैसला या किसी अंतरराष्ट्रीय जांच रिपोर्ट नहीं है।

ये गजा की बबार्दी और लाखों दफन मासूम जिंदगियों के फैसलो को लेकर फिलिस्तीन की आधिकारिक राय और उसका पक्ष है। इसमें राजदूत ने चार बड़े सवालों के जरिए अपनी बात रखने की कोशिश की है। न्होंने इस लेख में चार बहुत ही सीधे और सरल सवाल उठाए हैं–क्यों? क्या? कौन? और कहां?

जख्म और तबाही के 1000 दिन... लेकिन क्या दुनिया ने कुछ सीखा?

इसकी शुरूआत एक भावुक सवाल से होती हैं। फिलिस्तीनी राजदूत अब्दुल्ला एम. अबू शावेश लिखते हैं कि 1000 दिन बीत गए। हजारों परिवार बिखर गए। लाखों लोग बेघर हो गए। हजारों बच्चों ने अपने माता–पिता खो दिए। लेकिन दुनिया आज भी कई जरूरी सवालों का जवाब नहीं दे पाई। देखा जाए तो 7 अक्टूबर 2023 सिर्फ एक तारीख नहीं थी। उस दिन ने पूरी दुनिया की राजनीति, अंतरराष्ट्रीय कानून और इंसानियत को एक नई चुनौती दी।

पहला सवाल– आखिर यह सब क्यों हुआ?

गजा की तस्वीर को 7 अक्टूबर की घटना यानी महज उसी दिन से नहीं देखा जाना चाहिए। राजदूत अबू शावेश लिखते हैं–साल 1917 में ब्रिटेन ने 'बालफोर घोषणापत्र' के जरिए फलस्तीनियों की पुश्तैनी जमीन को दूसरों को सौंपने का वादा कर दिया था।

साल 1948 में लाखों फलस्तीनियों को बंदूक की नोक पर उनके अपने ही घरों से बाहर निकाल दिया गया, जिसे इतिहास में 'अल–नकबा' (तबाही) कहा जाता है। तब से लेकर आज तक

फलस्तीनी बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग अपने ही देश में बेघर शरणार्थी बनकर रह रहे हैं।

फिलिस्तीनी राजदूत ने कहा– गांधी जी के शांति के रास्ते पर चलने वाले फलस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास ने हमेशा शांति की बात की, लेकिन इस दर्द का कोई परमानेंट इलाज नहीं ढूंढा गया। अगर इतिहास को नजरअंदाज किया जाएगा तो असली वजह कभी समझ नहीं आएगी। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के उस बयान का भी जिक्र किया, जिसमें कहा गया था कि "7 अक्टूबर की घटना शून्य में नहीं हुई थी।"

दूसरा सवाल– 7 अक्टूबर को वास्तव में क्या हुआ?

7 अक्टूबर को जो कुछ हुआ, उसके बारे में दुनिया के सामने अलग–अलग दावे आए। कुछ आरोप लगाए गए। कुछ वीडियो सामने आए। कई बातें अंतरराष्ट्रीय मीडिया में चलीं। उसके बाद कई गंभीर आरोप भी लगाए गए। राजदूत का दावा है कि कुछ आरोपों के सार्वजनिक और स्वतंत्र प्रमाण अब तक सामने नहीं आए हैं। इसी वजह से उन्होंने मांग की है कि 7 अक्टूबर की घटनाओं की एक स्वतंत्र और अंतरराष्ट्रीय जांच होनी चाहिए।

लेकिन उस सुबह के बाद जो हुआ, उसने इंसानियत को शर्मसार कर दिया। 73,000 से ज्यादा बेकसूर लोग मारे जा चुके हैं, जिनमें सबसे ज्यादा संख्या नन्हे बच्चों और बेबस माताओं की है। बच्चों को भूखा रखकर तड़पाया जा रहा है, दवाइयों की कमी है और अस्पतालों को मलबे का ढेर बना दिया गया है। दुनिया भर में जब दूसरे देशों पर पाबंदियां लगती हैं, तो इस युद्ध को रोकने के लिए कोई आगे क्यों नहीं आता? यह दोहरा रवैया ही सबसे बड़ा दर्द है।

तीसरा सवाल– इस तबाही का जिम्मेदार कौन?

फिलिस्तीनी राजदूत अपने लेख में मानते हैं कि 7 अक्टूबर का हमला फिलिस्तीनी लड़ाकों ने किया था। लेकिन उनका कहना है कि कहानी यहीं खत्म नहीं होती। उन्होंने सवाल उठाया कि दुनिया की सबसे आधुनिक सुरक्षा व्यवस्था रखने वाला इजरायल उस दिन इतना बड़ा हमला कैसे नहीं रोक पाया?

अगर पहले से चेतावनी मिली थी तो उस पर कार्रवाई क्यों नहीं हुई? उन्होंने बताया कि इजरायल के मौजूदा प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की राजनीति ने जानबूझकर ऐसे हालात पैदा किए। गाजा और वेस्ट बैंक के फलस्तीनियों को आपस में बांटकर रखा गया, ताकि फलस्तीन के लोग कभी एक होकर अपनी आजादी और हक की मांग न कर सकें।

चौथा सवाल– 'कहां' ले जाएगा हमें यह रास्ता?

फिलिस्तीनी राजदूत भारत के लोगों और पूरी दुनिया से एक बहुत ही भावुक अपील करते हैं। वे पूछते हैं किः क्या ये 1000 दिन हमें कोई सबक सिखाएंगे? या हम ऐसे ही दिनों को गिनते रहेंगे?

वे कहते हैं–"इतिहास सिर्फ उन लोगों को गुनहगार नहीं मानेगा जिन्होंने जुल्म किया, बल्कि इतिहास उन लोगों को भी कटघरे में खड़ा करेगा जो यह सब देखकर भी चुप रहे। जिन्होंने सच का साथ देने की हिम्मत नहीं दिखाई।"

जब तक फलस्तीन के लोगों को उनके घर, उनकी आजादी और सम्मान से जीने का अधिकार नहीं मिलता, तब तक यह दर्द खत्म नहीं होगा। दुनिया को अब जागना होगा ताकि आने वाली नस्लों को फिर से ऐसे 1000 दिन न देखने पड़ें।

1000 दिनों की सबसे बड़ी कीमत किसने चुकाई?

इस जंग का सबसे बड़ा और अहम सवाल यही है कि आखिर इस तबाही की सबसे बड़ी किमत किसने चुकाई...जब इन एक हाजार दिनों को पीछे मुड़ कर देखें तब लगता है कि इस जंग में सबसे ज्यादा नुकसान आम लोगों को हुआ। वे लोग, जिनका राजनीति से कोई लेना–देना नहीं था।

वे बच्चे, जो स्कूल जाना चाहते थे। वे मां–बाप, जो अपने परिवार के साथ सामान्य जिंदगी जीना चाहते थे। वे बुजुर्ग, जो अपने घर छोड़ना नहीं चाहते थे। आज गजा के कई इलाकों में अस्पताल, स्कूल, सड़कें और घर बुरी तरह प्रभावित हो चुके हैं। बड़ी संख्या में लोग राहत शिविरों में रहने को मजबूर हैं। भोजन, दवा और पीने के पानी जैसी बुनियादी जरूरतें भी कई जगह चुनौती बनी हुई हैं।

क्या है दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौती

गजा की यह जंग सिर्फ दो पक्षों का संघर्ष नहीं रह गई है। इसका असर पूरी दुनिया की राजनीति, कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय कानून पर भी पड़ा है। यही वजह है कि 1000 दिन पूरे होने पर फिर वही सवाल उठ रहे हैं– क्या इस संघर्ष का कोई स्थायी समाधान निकलेगा?

क्या आम लोगों की पीड़ा कम होगी? क्या आने वाली पीढ़ियां भी इसी तरह जंग, डर और तबाही के बीच जीने को मजबूर रहेंगी? या फिर दुनिया इस दर्द से कोई सबक लेकर शांति की दिशा में आगे बढ़ेगी? इन सवालों के जवाब अभी भविष्य के गर्भ में हैं।

सिया गोयल को दोषी मत बनाओ', केतन अग्रवाल केस में नया मोड़, क्या फेमस फिल्ममेकर के बयान से बदल जाएगा गेम?

(जीएनएस)।

पुणे के चर्चित केतन अग्रवाल हत्याकांड को लेकर बॉलीवुड के फेमस डायरेक्टर संजय गुप्ता का एक सोशल मीडिया पोस्ट अब बड़े विवाद का कारण बन गया है। सिया गोयल के मामले पर अपनी राय रखते हुए संजय गुप्ता ने लोगों से जल्दबाजी में फैसला न सुनाने की अपील की है लेकिन उनकी ये टिप्पणी कई सोशल मीडिया यूजर्स को रास नहीं आई है। ऐसे में देखते ही देखते उनका पोस्ट वायरल हो गया और इंटरनेट पर तीखी प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई।

सिया गोयल के मामले पर क्या बोले संजय गुप्ता?

फिल्ममेकर संजय गुप्ता ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर एक पोस्ट शेयर करते हुए कहा है कि किसी भी व्यक्ति को कोर्टके फैसले से पहले दोषी करार देना उचित नहीं है। उन्होंने लिखा है कि जिस तरह साल 2020 में एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती को लेकर मीडिया और सोशल मीडिया पर माहौल बनाया गया था, वैसी स्थिति दोबारा नहीं दोहराई जानी चाहिए।

'फैसले से पहले किसी को अपराधी घोषित कर देना सही नहीं'

संजय गुप्ता ने अपने पोस्ट में कहा है कि वह किसी का पक्ष नहीं ले रहे हैं बल्कि केवल ये याद दिलाना चाहते हैं कि किसी मामले में अंतिम सच्चाई सामने आने से पहले सार्वजनिक रूप से किसी को अपराधी घोषित कर देना सही नहीं है। उनका कहना था कि रिया चक्रवर्ती के मामले में भी टीवी स्टूडियो और सोशल मीडिया पर पहले ही फैसला सुना दिया गया था जबकि कानूनी प्रक्रिया बाद में चली।

सोशल मीडिया पर फूटा लोगों का गुस्सा

हालांकि संजय गुप्ता की ये अपील सोशल मीडिया पर भारी पड़ गई है। कई यूजर्स ने उनके बयान की आलोचना करते हुए कहा है कि केतन अग्रवाल हत्याकांड और रिया चक्रवर्ती से जुड़े मामले की तुलना करना उचित नहीं है। कई लोगों ने सवाल उठाया है कि जब पुलिस जांच के आधार पर गिरफ्तारियां हो चुकी हैं और मामला

अदालत में विचाराधीन है, तब इस तरह की तुलना लोगों की भावनाओं को आहत कर सकती है। कुछ यूजर्स ने बेहद तीखी भाषा में प्रतिक्रिया देते हुए निर्देशक के बयान को असंवेदनशील करार दिया है।

संजय गुप्ता पर भड़के यूजर्स– तुम जैसे लोग जिंदा कैसे हैं

–संजय गुप्ता के इसी पोस्ट को देख यूजर्स भड़क गए हैं और इसे बेतुका बताया गया है। उन्होंने संजय गुप्ता को बुरी तरह लताड़ा है। एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा है–तुम जैसे लोगों को सिया या रिया के हाथों मर जाना चाहिए। अच्छे लोगों की हत्या हो रही है और तुम जैसे बेवकूफ, बिना दिमाग और रीढ़ की हड्डी वाले लोग अभी भी जिंदा हैं। कलयुग में डायन और राक्षस, सब कुछ देखने को मिलेगा।

–वहीं एक दूसरे शख्स ने लिखा है– ये आदमी तो पागल हो गया है। काश वह केतन की जगह होता और फिर कमेंट करता। इन दो दुखद घटनाओं की उसकी तुलना बहुत ही अजीब है। अगर तुममें जरा भी समझदारी और अक्ल बची है, तो अपने कमेंट्स वापस ले लो।

–एक दूसरे यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा है– बहुत ही घिनौनी सोच है। तुम्हारे बेटे या बेटी के साथ ऐसा होता, मर्डर हो जाता तब भी यही कहते? तुम्हारे बच्चों और तुम पर तरस आता है। एक और यूजर ने लिखा है– क्या तुम यही बात तब भी कहते अगर तुमने अपना बेटा खो दिया होता? तुम्हारे बच्चों और तुम पर तरस आता है। तुम एक ऐसे इंसान हो, जिसके अंदर कोई इमोशन नहीं। तुम पिता नहीं हो सकते। तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

क्यों याद किया जा रहा है रिया चक्रवर्ती का मामला?

–संजय गुप्ता के बयान के बाद एक बार फिर साल 2020 का बहुचर्चित मामला चर्चा में आ गया है। एक्टर सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद उनकी एक्स गर्लफ्रेंड रिया चक्रवर्ती मीडिया और जांच एजेंसियों के रडार पर आ गई थीं।

–उस समय ड्रग्स से जुड़े एक मामले में रिया और उनके भाई का नाम सामने आया था, जिसके बाद उन्हें कानूनी प्रक्रिया का सामना करना पड़ा था। पूरे घटनाक्रम के दौरान टीवी डिबेट्स और सोशल मीडिया पर रिया चक्रवर्ती को लेकर खूब चर्चा हुई थी। बाद में जब कानूनी जांच आगे बढ़ी और मामला कोर्ट तक पहुंचा तो रिया को इंसाफ मिला।

केतन अग्रवाल हत्याकांड में अब तक क्या सामने आया?

पुणे में सामने आए केतन अग्रवाल हत्याकांड ने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींचा है। पुलिस जांच के अनुसार केतन की शादी सिया गोयल से होने वाली थी। जांच में सामने आए तथ्यों के आधार पर पुलिस का दावा है कि सिया इस रिश्ते से खुश नहीं थीं और किसी अन्य व्यक्ति के साथ संबंध में थीं।

जांच एजेंसियों के अनुसार कथित तौर पर एक साजिश के तहत केतन अग्रवाल को लोहागढ़ किले के इलाके में ले जाया गया, जहां उनकी मौत हो गई। मामले की जांच के बाद पुलिस ने सिया गोयल और उनके कथित प्रेमी चेतन को गिरफ्तार किया। फिलहाल दोनों न्यायिक हिरासत में हैं और मामले की सुनवाई आगे बढ़ रही है।

बयान से ज्यादा चर्चा में आ गई तुलना

–संजय गुप्ता का मूल मैसेज न्यायिक प्रक्रिया पूरी होने तक संयम बरतने की अपील थी लेकिन जिस तरह उन्होंने इस मामले की तुलना रिया चक्रवर्ती केस से की, वही विवाद की मुख्य वजह बन गई। सोशल मीडिया पर बहस इस बात को लेकर तेज हो गई कि क्या दो अलग परिस्थितियों वाले मामलों को एक ही नजरिए से देखा जा सकता है। फिलहाल केतन अग्रवाल हत्याकांड की जांच और कानूनी प्रक्रिया जारी है। वहीं संजय गुप्ता का बयान सोशल मीडिया पर चर्चा का केंद्र बना हुआ है, जहां लोग अपने–अपने नजरिए से इस पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं।

–केतन अग्रवाल हत्याकांड पहले से ही देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ था, लेकिन संजय गुप्ता के एक सोशल मीडिया पोस्ट ने इस मामले को नया मोड़ दे दिया। जहां कुछ लोग उनकी बात को न्यायिक प्रक्रिया का सम्मान करने की अपील मान रहे हैं, वहीं बड़ी संख्या में यूजर्स इस तुलना को अनुचित बता रहे हैं। ऐसे में यह बहस अब सोशल मीडिया से निकलकर व्यापक सार्वजनिक चर्चा का हिस्सा बन चुकी है।

कोलकाता की दुर्गापूजा समिति ने तैयार कराया पीएम मोदी का विशाल भित्तिचित्र

कोलकाता की चोरबागान सार्वजनीन दुर्गापूजा समिति ने अपने 91वें वर्ष के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक विशाल भित्तिचित्र तैयार किया है। चोरबागान समिति ने पीएम मोदी का विशाल भित्तिचित्र बनाया। कलाकृति में पीएम मोदी मां दुर्गा की आरती करते दिख रहे हैं। यह पीएम की आस्था और बंगाल संस्कृति का सम्मान है। (जीएनएस)।

कोलकाता। कोलकाता की सुप्रसिद्ध चोरबागान सार्वजनीन दुर्गापूजा समिति ने अपने 91वें वर्ष के आयोजन की तैयारियों के तहत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विशाल भित्तिचित्र तैयार कराया है, जिसमें वह मां दुर्गा की आरती करते दिख रहे हैं।

समिति का कहना है कि यह कलाकृति प्रधानमंत्री की आस्था व बंगाल की धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराओं से उनके जुड़ाव को सम्मान देने के उद्देश्य से तैयार की गई है।

यह भित्तिचित्र श्रद्धा, सद्भाव और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है, जो दुर्गापूजा के मूल संदेश को भी दर्शाता है। इसे दुर्गापूजा के दौरान पंडाल में प्रदर्शित किया जाएगा। समिति ने कहा कि विधानसभा चुनाव से पहले प्रधानमंत्री ने समिति कार्यालय के निकट स्थित ऐतिहासिक ठनठनिया कालीबाड़ी में जाकर मां काली की पूजा-अर्चना की थी।

इसे लेकर स्थानीय लोगों में काफी उत्साह देखा गया था। समिति ने उम्मीद जताई है कि प्रधानमंत्री इस वर्ष दुर्गापूजा के दौरान कोलकाता आएंगे और उनके समारोह में भी शामिल होंगे। स्थानीय लोग भी चाहते हैं कि प्रधानमंत्री यहां की पूजा का उद्घाटन करें।

बिना गारंटी युवाओं को मिलेगा 5 लाख रुपए तक लोन, योगी आदित्यनाथ सरकार की एमवाईयूएमए योजना के बारे में सबकुछ जानिए

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (MYUVA) यूपी सरकार की एक बेहतरीन पहल है. इस योजना की शुरूआत सूबे के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के मकसद से किया गया है. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की इस योजना के तहत युवाओं को बिना गारंटी के 5 लाख रुपए तक का लोन आसानी से मिलेगा। (जीएनएस)।

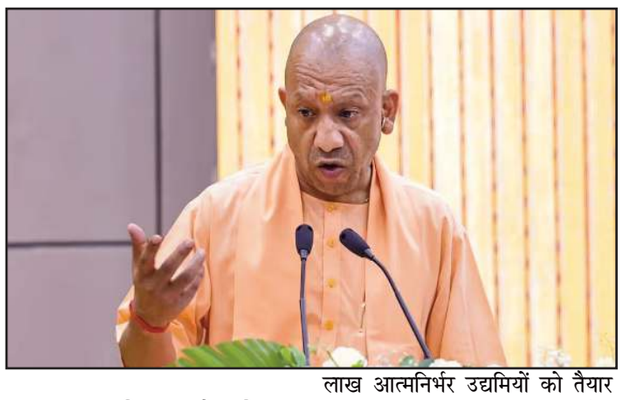

उत्तर प्रदेश की इकॉनमी को नई रफ्तार देने के लिए योगी सरकार लगातार काम कर रही है. इस मकसद को पूरा करने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सूबे की सबसे बड़ी ताकत युवा आबादी पर फोकस किया है. योगी सरकार की कोशिश हर साल एक लाख नए युवा उद्यमी तैयार करने का है. यूपी सरकार इस मकसद को हासिल करने के लिए 10 सालों में 10 लाख आत्मनिर्भर उद्यमियों को तैयार करने के प्लान पर काम कर रही है.

युवाओं के पास विजन होता है, उनके पास आइडिया होता है. लेकिन कारोबार शुरू करने के लिए युवाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती पैसा जुटाना होता है. पारंपरिक बैंकिंग सिस्टम से पैसा जुटाने के लिए गारंटी देनी पड़ती है. इस शर्त को पूरा करना ज्यादातर युवाओं के लिए असंभव होता है. इस समस्या का समाधान सीएम योगी आदित्यनाथ की योजना ट वश्अ है. इस योजना के जरिए पैसा जुटाने की समस्या खत्म होगी और युवा अपने सपने को साकार कर पाएंगे.

MYUVA योजना में 5 लाख तक ब्याज फ्री लोन-

उत्तर प्रदेश सरकार की ट वश्अ योजना के तहत सूबे के स्थाई निवासी कारोबार शुरू करने के लि 5 लाख रुपए तक ब्याज फ्री बिना गारंटी के लोन ले सकते हैं. इस योजना के तहत वे युवा लोन ले सकते हैं, जिनकी उम्र 21 साल से 40 साल के बीच है. इस योजना के तहत युवाओं को बिना किसी गारंटी के लोन मिलेगा. किसी तीसरे व्यक्ति की गारंटी या संपत्ति गिरवी रखने की जरूरत नहीं होगी. सरकार परियोजना लागत पर 10 फीसदी मार्जिन मनी अनुदान भी देती है. जिससे कारोबार शुरू करने का शुरूआती वित्तीय बोझ कम हो जाता है.

MYUVA का टू फेज डेवल्पमेंट मॉडल

पहला चरण दूसरा चरण
5 लाख तक का लोन 1 0 से 20 लाख तक का लोन
100 फीसदी ब्याज सहायता समय पर लोन चुकाने पर ब्याज सहायता
बिना गारंटी निर्धारित सीमा तक 50 फीसदी ब्याज सब्सिडी

MYUVA योजना का लाभ लेने के लिए क्या होना चाहिए?

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (MYUVA) यूपी सरकार की एक बेहतरीन पहल है. इस योजना के तहत युवा खुद अपना कारोबार शुरू करने के लिए 5 लाख रुपए तक का लोन बिना किसी गारंटी के ले सकते हैं. चलिए आपको बताते हैं कि इस योजना का लाभ उठाने के लिए क्या-क्या होना जरूरी है.

जिन युवा की उम्र 21 साल से 40 साल के बीच है, वो इस योजना का लाभ ले सकते हैं.

उत्तर प्रदेश का स्थाई निवासी को ही इसका फायदा मिलेगा.

लाभ लेने वाला युवा कम से कम 8वीं पास होना चाहिए.

किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से तकनीकी डिग्री/डिप्लोमा या सरकारी कौशल प्रशिक्षण का प्रमाणपत्र होना चाहिए. सरकारी कौशल प्रशिक्षण में ओडीओपी, विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना, आईआईटी शामिल है.

कैसे करें आवेदन?

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (MYUVA) का लाभ उठाने के लिए आवेदन का प्रोसेस भी काफी आसान बनाया गया है. इस योजना के लिए आवेदन उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन निदेशालय के वढटरटए पोर्टल और आधिकारिक टववश्अ पोर्टल के जरिए ऑनलाइन किया जा सकता है. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बैंकों को लोन देने के प्रोसेस में तेजी लाने और राज्य के क्रेडिट-डिपॉजिट अनुपात में सुधार के निर्देश भी दिए हैं. जिससे उद्यमियों तक लोन की पहुंच और भी आसान हो सके.

ट वश्अ जैसी योजनाओं से सूबे में उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा. इसके साथ ही रोजगार के नए मौके मिलेंगे और सूबे की अर्थव्यवस्था को तेज गति मिलेगी.

गर्मी और उमस का बड़ा यू-टर्न! जे एण्ड के राज्य में दोबारा बंद कर दिए गए सभी स्कूल, कब तक चलेगी छुट्टी?

(जीएनएस)।

देश के कई राज्यों में गर्मियों की छुट्टियां खत्म होने के बाद स्कूलों में फिर से पढ़ाई शुरू हो चुकी है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, हरियाणा और पंजाब समेत कई जगहों पर बच्चे रोज सुबह स्कूल पहुंच रहे हैं। इसी बीच एक राज्य ने मौसम की गंभीर स्थिति को देखते हुए अलग फैसला लिया है। जम्मू में लगातार बढ़ती गर्मी और उमस के कारण वहां सरकार ने दोबारा स्कूलों में छुट्टी घोषित कर दी है।

इस फैसले से हजारों छात्रों और उनके परिवारों को राहत मिली है। प्रशासन का कहना है कि बच्चों की सुरक्षा और सेहत सबसे पहले है। ऐसे मौसम में उन्हें लंबे समय तक स्कूल में रखना सही नहीं होगा। इसी वजह से सरकारी और निजी दोनों तरह के स्कूलों के लिए नया आदेश जारी किया गया है, जो जुलाई के बीच तक लागू रहेगा।

जम्मू संभाग में दोबारा छुट्टियों का ऐलान

यह फैसला जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने लिया है। लगातार बढ़ते तापमान और उमस को देखते हुए जम्मू संभाग के समर जोन में आने वाले सभी सरकारी और मान्यता प्राप्त निजी स्कूल 6 जुलाई 2026 से 19 जुलाई 2026 तक बंद रहेंगे। इस दौरान कक्षा 1 से लेकर 12वीं तक के सभी छात्रों पर यह आदेश समान रूप से लागू होगा।

दूसरे राज्यों में शुरू हो चुकी हैं क्लास

जहां जम्मू संभाग में स्कूल बंद किए जा रहे हैं, वहीं देश के अधिकतर राज्यों में पढ़ाई पहले ही शुरू हो चुकी है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, हरियाणा और पंजाब में जुलाई के शुरूआती दिनों से नियमित कक्षाएं चल रही हैं। कई शहरों में सुबह स्कूल बसें और बच्चों से भरे वाहन फिर सड़कों पर दिखाई देने लगे हैं। हालांकि उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में भारी बारिश के कारण शुक्रवार को रेनी डे घोषित कर स्कूलों में छुट्टी दी गई।

बच्चों की सेहत को देखते हुए लिया गया फैसला

स्कूल शिक्षा विभाग की ओर से जारी आदेश में साफ कहा गया है कि मौजूदा मौसम को देखते हुए बच्चों को स्कूल बुलाना ठीक नहीं होगा। अधिकारियों के मुताबिक दोपहर के समय तापमान काफी बढ़ रहा है। ऐसे में छोटे बच्चों के लिए पानी की कमी और हीट स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है। इसी वजह से छुट्टियां बढ़ाने का फैसला लिया गया ताकि छात्र सुरक्षित रह सकें।

40 डिग्री के पार पहुंच रहा तापमान

मौसम विभाग के अनुसार जम्मू और आसपास के मैदानी इलाकों में पिछले कई दिनों से तापमान लगातार 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर बना हुआ है। केवल तेज धूप ही परेशानी नहीं बढ़ा रही, बल्कि हवा में नमी ज्यादा होने से उमस भी लोगों के लिए मुश्किल बन गई है। ऐसे मौसम में स्कूल बस या वैन से सफर करना और बिना एसी वाले कमरों में कई घंटे तक पढ़ाई करना बच्चों के लिए काफी कठिन माना जा रहा है।

सरकार के इस फैसले के बाद कई अभिभावकों ने राहत जताई है। उनका कहना है कि इस समय बच्चों की सेहत सबसे ज्यादा जरूरी है। उनका मानना है कि इतनी तेज गर्मी में रोज स्कूल भेजना जोखिम भरा हो सकता है, इसलिए छुट्टी बढ़ाने का फैसला सही समय पर लिया गया है।

छुट्टियों में पढ़ाई कैसे होगी?

स्कूल बंद रहने के बावजूद पढ़ाई पूरी तरह नहीं रुकेगी। शिक्षा विभाग ने सभी स्कूलों को निर्देश दिया है कि छुट्टियों के दौरान छात्रों को होम असाइनमेंट या प्रोजेक्ट वर्क दिया जाए ताकि उनकी पढ़ाई जारी रहे। वहीं कुछ बड़े निजी स्कूलों ने इस दौरान ऑनलाइन क्लास चलाने की भी योजना बनाई है, जिससे सिलेबस पर ज्यादा असर न पड़े।

फिलहाल सरकार की प्राथमिकता यही है कि बच्चे दोपहर की तेज धूप और गर्मी से सुरक्षित रहें।

पीएम मोदी देंगे जोधपुर को नए एयरपोर्ट टर्मिनल की सौगात, केंद्रीय मंत्री बोले- मारवाड़ के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि

केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने बताया कि शनिवार को प्रधानमंत्री जोधपुर के दौरे पर आएंगे। यहां पीएम मोदी जोधपुर एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन की सौगात देंगे। गजेंद्र सिंह शेखावत ने पीएम मोदी के जोधपुर दौरे की जानकारी दी। (जीएनएस)।

जोधपुरः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार 4 जुलाई को जोधपुर में होंगे। यहां पीएम मोदी जोधपुर को बहुप्रतीक्षित नए एयरपोर्ट टर्मिनल की सौगात देंगे। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने पीएम मोदी के दौरे को लेकर कहा कि नए एयरपोर्ट टर्मिनल की सौगात केवल जोधपुर ही नहीं, बल्कि पूरे मारवाड़ क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि लंबे समय के इंतजार के बाद जोधपुर के लिए यह गौरव का क्षण आया है। नए टर्मिनल के शुरू होने के बाद एयरपोर्ट की यात्री संभालने की क्षमता वर्तमान क्षमता से लगभग 10 गुना बढ़ जाएगी, जिससे भविष्य की आवश्यकताओं को आसानी से पूरा किया जा सकेगा।

प्रधानमंत्री कितने बजे जोधपुर पहुंचेंगे?

प्रधानमंत्री मोदी शनिवार सुबह 10:45 बजे जोधपुर पहुंचेंगे, जहां वह जोधपुर एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का उद्घाटन करेंगे और संशोधित उड़ान योजना की शुरूआत करेंगे। अगले 10 वर्षों के लिए 28,840 करोड़ रुपए के बजट वाली यह योजना क्षेत्रीय हवाई संपर्क को नई गति देगी और 'उड़े देश का आम नागरिक' के विजन को आगे बढ़ाएगी।

कितनी लागत से बना है जोधपुर एयरपोर्ट का नया टर्मिनल भवन?

पीएम मोदी 480 करोड़ रुपए की लागत से बने जोधपुर एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का भी उद्घाटन करेंगे। 23,000 वर्गमीटर से अधिक क्षेत्र में फैला यह टर्मिनल हर साल 20 लाख यात्रियों को संभालने की क्षमता रखता है। इसमें आधुनिक यात्री सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसकी वास्तुकला राजस्थान की शाही विरासत से प्रेरित है, जिसमें मेहराब, झरोखे और आधुनिक डिजाइन का सुंदर मेल देखने को मिलता है। पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए इसे ऊर्जा दक्षता, जल संरक्षण और ग्रीन बिल्डिंग मानकों के अनुरूप बनाया गया है तथा इसे 5-स्टार गृह रेटिंग दिलाने का लक्ष्य रखा गया है।

100 नए एयरोड्रोम विकसित किए जाएंगे

'उड़े देश का आम नागरिक' योजना के तहत 100 नए एयरोड्रोम विकसित किए जाएंगे, जिन पर 12,000 करोड़ रुपए से अधिक खर्च होगा। क्षेत्रीय हवाई अड्डों के शुरूआती संचालन को मजबूत बनाने के लिए 2,500 करोड़ रुपए से अधिक का संचालन एवं रखरखाव समर्थन दिया जाएगा। दूरदराज और कठिन इलाकों में बेहतर संपर्क के लिए 200 आधुनिक हेलीपैड बनाए जाएंगे।

खामेनेई के साथ कौन चार लोग होंगे दफन? क्या है चारों से रिश्ता? एक है मासूम

(जीएनएस)।

ईरान की राजधानी तेहरान के ग्रैंड मुसल्ला में जब पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की राजकीय अंतिम यात्रा शुरू हुई, तो वहां का माहौल बेहद भावुक था। लाखों लोग अपने नेता को अंतिम विदाई देने पहुंचे थे। लेकिन इस पूरे समारोह में एक ऐसी तस्वीर सामने आई जिसने पूरी दुनिया का ध्यान खींच लिया। अली खामेनेई के ताबूत के साथ चार और ताबूत रखे गए थे। इनमें एक बहुत छोटा ताबूत भी था, जिसने हर किसी को भावुक कर दिया। आइए जानते हैं कि ये चार लोग कौन थे और इन्हें खामेनेई के साथ राजकीय सम्मान क्यों दिया गया।

एक साथ रखे गए पांच ताबूत, रुला दिया सबको

ग्रैंड मुसल्ला में रखे गए पांच ताबूतों में सबसे बड़ा ताबूत अयातुल्ला अली खामेनेई का था। उनके बगल में परिवार के चार अन्य सदस्यों के ताबूत रखे गए थे। इनमें सबसे ज्यादा लोगों का ध्यान एक छोटे ताबूत ने खींचा, जिसमें सिर्फ 14 महीने की मासूम बच्ची का शव था। इस मंजर ने न सिर्फ ईरान बल्कि पूरी दुनिया को भावुक कर दिया और सोशल मीडिया से लेकर अंतरराष्ट्रीय मीडिया तक इसकी चर्चा होने लगी।

28 फरवरी 2026 के हमले में गई थी पूरे परिवार की जान

ईरानी प्रशासन के मुताबिक, 28 फरवरी 2026 को अमेरिका और इजरायल के साझा हवाई हमले में अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत हुई थी। इस हमले में उनके परिवार के कई सदस्य भी मारे गए थे। सुरक्षा हालात और युद्ध जैसी स्थिति के कारण शवों को कई महीनों तक सुरक्षित रखा गया। बाद में युद्धविराम और सुरक्षा व्यवस्था बेहतर होने के बाद सभी का एक साथ पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार करने का फैसला लिया गया।

खामेनेई के साथ किन चार लोगों को दी गई अंतिम विदाई?

अली खामेनेई के साथ उनकी सबसे बड़ी बेटी बुशरा अल-खामेनेई का ताबूत रखा गया था। बुशरा सार्वजनिक जीवन से दूर रहती थीं, लेकिन परिवार और ईरान की आंतरिक नीतियों में उनकी राय को काफी अहम माना जाता था। उनके बगल में उनके पति मिसबाह अल-होदा बाघेरी का ताबूत रखा गया। बाघेरी ईरान के एक प्रभावशाली धार्मिक परिवार से जुड़े थे और उन्हें देश के धार्मिक नेतृत्व का अहम हिस्सा माना जाता था। उनकी भी मौत उसी हवाई हमले में हुई थी।

तीसरा ताबूत जहरा हद्दाद अदेल का था, जो मोजतबा खामेनेई की पत्नी थीं। वह ईरान के पूर्व संसद अध्यक्ष गुलाम-अली हद्दाद-अदेल की बेटी थीं। उनका परिवार ईरान की राजनीति, शिक्षा और सांस्कृतिक संस्थानों में लंबे समय से प्रभावशाली माना जाता रहा है। वे अली खामेनेई की रिश्ते में बहू लगती थीं।

14 महीने की पोती का ताबूत बना सबसे भावुक पल

सबसे छोटा ताबूत जहरा मोहम्मदी गोलपायगनी का था, जो अली खामेनेई की 14 महीने की पोती थीं। इस मासूम बच्ची की मौत ने युद्ध की सबसे दर्दनाक सच्चाई दुनिया के सामने रख दी। लोगों का कहना था कि युद्ध में सबसे ज्यादा नुकसान अक्सर उन लोगों को होता है जिनका किसी संघर्ष से कोई लेना-देना नहीं होता। यही वजह रही कि इस बच्ची की तस्वीरें दुनिया भर में चर्चा का विषय बन गईं।

सुरक्षा कारणों से महीनों बाद हुआ अंतिम संस्कार

हमले के बाद ईरान और अमेरिका-इजरायल के बीच तनाव काफी बढ़ गया था। ऐसे माहौल में लाखों लोगों की मौजूदगी वाला राजकीय अंतिम संस्कार कराना सुरक्षा के लिहाज से संभव नहीं था। इसलिए शवों को सुरक्षित स्थान पर रखा गया। कई महीनों तक चली कूटनीतिक बातचीत और युद्धविराम समझौते के बाद सरकार ने अंतिम संस्कार की तारीख घोषित की।

सरकार ने पूरे कार्यक्रम के लिए डिटेल शेड्यूल भी जारी किया। 2 और 3 जुलाई को तेहरान के ग्रैंड मुसल्ला में राजकीय शोक सभा और विदेशी नेताओं की श्रद्धांजलि हुई। 4 और 5 जुलाई को आम लोगों को अंतिम दर्शन का मौका दिया गया। जबकि 9 जुलाई को मशहद में पूरे राजकीय सम्मान के साथ सभी को सुपुर्द-ए-खाक किया जाएगा। फिलहाल पूरी दुनिया की नजरे ईरान पर टिकी हुई हैं।

संजय खान की बेटी फराह का बड़ा खुलासा, सरेआम बताया पिता और जीनत अमान के रिलेशन का सच, मारपीट की खोली पोल

(जीएनएस)।

बॉलीवुड के पुराने और चर्चित विवादों में से एक संजय खान और जीनत अमान का रिश्ता आज भी लोगों की दिलचस्पी का विषय बना हुआ है। दशकों पहले दोनों के रिश्ते और कथित मारपीट की खबरों ने खूब सुर्खियां बटोरी थीं। अब इस मामले पर पहली बार संजय खान की बेटी फराह खान अली ने खुलकर अपनी बात रखी है। उन्होंने न केवल अपने पिता का बचाव किया है बल्कि उन तमाम आरोपों को भी खारिज कर दिया है जिनमें कहा जाता रहा है कि संजय खान ने जीनत अमान के साथ मारपीट की थी।

'जीनत अमान को पीटने वाली कहानी पूरी तरह झूठी है'

एक हालिया इंटरव्यू में फराह खान अली ने कहा कि सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म्स पर उनके पिता के बारे में जो बातें कही जाती हैं, वो वास्तविकता से काफी दूर हैं। उनके मुताबिक संजय खान कभी भी ऐसे व्यक्ति नहीं रहे जो किसी महिला के साथ हिंसक व्यवहार करें।

फराह ने कहा- मैंने पिता को महिलाओं का सम्मान करते देखा है

फराह खान अली ने कहा कि उन्होंने अपने पिता संजय खान को हमेशा महिलाओं का सम्मान करते हुए देखा है। उनका मानना है कि जिस तरह की कहानियां सालों से दोहराई जाती रही हैं, वह तथ्यों पर आधारित नहीं हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि उनके पिता ने न तो उनकी मां पर कभी हाथ उठाया और न ही परिवार की किसी अन्य महिला के साथ गंदा बर्ताव किया।

आंख की चोट को लेकर भी सामने रखी अलग कहानी

-फराह खान अली ने जीनत अमान की आंख से जुड़ी उस चर्चित कहानी पर भी सवाल उठाए, जिसमें दावा किया जाता है कि कथित मारपीट के कारण उनकी आंख को नुकसान पहुंचा था। उन्होंने बताया कि उनकी मां जरीन खान ने उन्हें बताया था कि जीनत अमान की मां को भी आंखों से जुड़ी समस्या थी।

-फराह खान अली ने बताया कि परिवार में पहले से मौजूद इस स्वास्थ्य स्थिति के कारण जीनत अमान को भी ऐसी दिक्कत रही होगी। फराह का कहना है कि आंखों की समस्या को हिंसा से जोड़कर पेश करना गलत है और इससे उनके पिता की इमेज को नुकसान पहुंचा है।

जीनत अमान और संजय खान के रिश्ते ने सबको परेशान किया

-फराह खान अली ने स्वीकार किया कि उनके पिता और जीनत अमान के बीच रिश्ता था और इस वजह से उनके माता-पिता की शादीशुदा जिंदगी में गंभीर तनाव भी आया था। उन्होंने बताया कि उस दौर में उनकी मां जरीन खान बेहद मुश्किल परिस्थितियों से गुजरी थीं लेकिन उन्होंने परिवार को संभालने का फैसला किया था।

-फराह के अनुसार उनकी मां एक मजबूत व्यक्तित्व वाली महिला थीं। उन्होंने हालात का सामना किया, परिवार को टूटने से बचाया और बाद में जीवन में आगे बढ़ने का निर्णय लिया। इसी वजह से आज भी वह अपनी मां के धैर्य और समझदारी की तारीफ करती हैं।

जरीन खान पर लगे आरोपों को भी बताया निराधार

सालों से ये भी कहा जाता रहा कि कथित विवाद के दौरान जरीन खान भी मौजूद थीं और उन्होंने भी जीनत अमान के साथ गंदा बर्ताव किया था। फराह खान अली ने इन दावों को भी सिरे से खारिज कर दिया था। उन्होंने कहा कि उनकी मां का स्वभाव ऐसा नहीं था कि वह किसी दूसरी महिला के साथ सार्वजनिक रूप से लड़ाई-झगड़ा करें। फराह के मुताबिक जरीन खान हमेशा गरिमा और संयम के साथ परिस्थितियों का सामना करने वाली महिला रही हैं। इसलिए उनके खिलाफ फैलाई गई ऐसी बातें सच नहीं लगतीं।

'महिलाओं के सम्मान को लेकर बेहद सख्त थे मेरे पिता'

अपने पिता के व्यक्तित्व का जिक्र करते हुए फराह खान अली ने एक पुराना किस्सा भी शेयर किया था। उन्होंने बताया कि संजय खान महिलाओं के सम्मान को लेकर बेहद संवेदनशील थे। यदि कोई व्यक्ति महिलाओं या बच्चों के सामने अभद्र भाषा का इस्तेमाल करता था, तो वह इसका विरोध करते थे। फराह खान अली के अनुसार उन्होंने अपने पिता को कई बार महिलाओं की गरिमा की रक्षा के लिए खड़ा होते देखा है। यही कारण है कि वह उन पर लगाए गए हिंसा के आरोपों को स्वीकार नहीं कर पातीं।

मुस्लिम रीति-रिवाज से हुई थी शादी और तलाक

इंटरव्यू के दौरान फराह खान अली ने ये भी स्वीकार किया है कि उनके पिता और जीनत अमान ने उस दौर में मुस्लिम रीति-रिवाजों के अनुसार शादी की थी। बाद में दोनों का तलाक भी इसी प्रक्रिया के तहत हुआ था। हालांकि उन्होंने कहा कि इस विषय में उन्होंने कभी अपने पिता से विस्तार से चर्चा नहीं की क्योंकि परिवार उस अध्याय को पीछे छोड़ चुका था। फराह खान का कहना है कि उनकी मां ने भी समय के साथ सब कुछ भुलाकर आगे बढ़ने का फैसला किया था।

संजय खान पहले दे चुके हैं सफाई

-जानकारी के अनुसार संजय खान खुद भी अतीत में इन आरोपों पर प्रतिक्रिया दे चुके हैं। अपनी आत्मकथा और विभिन्न इंटरव्यू में उन्होंने दावा किया था कि उन्होंने कभी जीनत अमान को थप्पड़ नहीं मारा। उनका कहना था कि जीनत अमान की आंखों से जुड़ी समस्या को गलत तरीके से उनके साथ जोड़ा गया और समय के साथ ये एक चर्चित अफवाह बन गई।